राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय 2

परमेश्वर का राज्य

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय...1
वृहद् एवं संकीर्ण..1
अपरिवर्तनीय 2
विकासशील...2
प्राचीन इतिहास 4
स्थान..5
आरम्भिक तैयारियाँ...5
निरन्तर विस्तार..6
लोग 7
याजक..7
सह-शासक 8
प्रगति..9
वैश्विक विश्वासघात..9
दुष्टता और न्याय...10
दीर्घावधि रणनीति..10
इस्राएल जाति...12
स्थान...12
मूल केन्द्र..13
विस्तार 14
लोग 15
इस्राएल का चुनाव..15
याजकों का राज्य..15
याजक और राजा..16
प्रगति...16
वायदा..16
निर्गमन और विजय..17
साम्राज्य...18
नया नियम..20
स्थान...21
केन्द्र 21
विस्तार 22
लोग 22

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मसीह 23
विश्वासी 24
प्रगति 25
उदघाटन 25
निरन्तरता 26
पूर्णता 26
उपसंहार 26

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय दो

परमेश्वर का राज्य

परिचय

अंग्रेजी में हमारे पास एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन करने की अभिव्यक्ति है जो विवरणों में खो जाता है। हम अक्सर कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति-वृक्षों के कारण जंगल को नहीं देख पाता है। अब बहुत सी संस्कृतियों में ऐसी ही अभिव्यक्तियाँ हैं; इसलिए इस बात को समझना कठिन नहीं है कि इससे हमारा क्या मतलब है। जब हम बहुत सारे विवरणों से घिरे होते हैं, तो बड़े, और अधिक महत्वपूर्ण मुद्दों पर असमंजस में पड़ने की हद तक गौण बातों में खो जाना आसान होता है। अतः, असमंजसपूर्ण परिस्थितियों में, हम अक्सर एक-दूसरे को पीछे हटकर बड़ी तस्वीर को देखने की याद दिलाते हैं।

अधिकाँश लोगों के लिए, पुराना नियम वह स्थान है जहाँ विवरण बड़ी तस्वीर को अस्पष्ट बना देते हैं। पुराना नियम एक बहुत बड़ी पुस्तक है, जिसमें इतने अधिक नाम, स्थान, घटनाएँ, धर्मविज्ञानी शिक्षाएँ और नैतिक निर्देश हैं कि हमारी नजर आसानी से उन महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों से हट सकती है जो पुराने नियम को एकीकृत बनाते हैं। अब, इस असमंजसपूर्ण और घबरा देने वाले अनुभव पर पार पाने के लिए, हमें चाहिए कि हम पीछे हटकर सम्पूर्ण पुराने नियम की वृहद् तस्वीर को देखें।

यह हमारे पुराने नियम के सर्वेक्षण राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन, का दूसरा अध्याय है। जैसा हम इस श्रृंखला में देखेंगे, पुराना नियम परमेश्वर के राज्य से संबंधित एक पुस्तक है, जिसका प्रशासन दिव्य वाचाओं द्वारा होता है, जिन्हें पुराने नियम कैनन की पुस्तकों के द्वारा समझाया और विशिष्ट परिस्थितियों में लागू किया गया है। इस अध्याय का शीर्षक है-परमेश्वर का राज्य, और इस अध्याय में हम देखेंगे कि परमेश्वर के राज्य या शासन के बारे में बाइबल के धर्मविज्ञान की उचित समझ पुराने नियम पर सर्वाधिक पूर्ण और एकीकृत दृष्टिकोण उपलब्ध कराती है।

इस अध्याय में, हम परमेश्वर के राज्य के बारे में बाइबल की शिक्षा के चार आयामों को देखेंगे। पहला, हम देखेंगे कि पवित्र वचन परमेश्वर के राज्य के बारे में वृहद् और संकीर्ण दोनों अर्थों में किस प्रकार बताता है। दूसरा, हम पृथ्वी के इतिहास के आरम्भिक चरणों में, आदि युग के दौरान परमेश्वर के राज्य को देखेंगे। तीसरा, हम पुराने नियम इस्राएल के राष्ट्रीय इतिहास में परमेश्वर के राज्य को देखेंगे। और चौथा, हम देखेंगे कि नये नियम में परमेश्वर का राज्य किस प्रकार प्रकट होता है। इन चार बिन्दुओं को देखने के द्वारा, हम सम्पूर्ण पुराने नियम पर एक विस्तृत और सुसंगत दृष्टिकोण को पा सकेंगे। आइए पहले हम देखते हैं कि पुराना नियम परमेश्वर के राज्य के बारे में वृहद् और संकीर्ण दोनों अर्थों में किस प्रकार बात करता है।

वृहद् एवं संकीर्ण

जब हम इस अध्याय को आरंभ करते हैं तो यह दो दृष्टिकोणों का वर्णन करने में सहायता करेगा जो परमेश्वर के राज्य की उचित समझ के लिए नितान्त आवश्यक हैं। पहला, हम देखेंगे कि, वृहद् अर्थ में, पुराना नियम सिखाता है कि परमेश्वर की सर्वोच्चता पूर्ण और अपरिवर्तनीय है। और दूसरा, हम देखेंगे कि, संकीर्ण अर्थ में, इतिहास में परमेश्वर परमेश्वर का राज्य विकसित हो रहा है और बढ़ रहा है। आइए पहले हम परमेश्वर की अपरिवर्तनीय सर्वोच्चता पर सामान्य दृष्टिकोण को देखते हैं।

अपरिवर्तनीय

बाइबल की सुस्पष्ट शिक्षा है: परमेश्वर अपनी सारी सृष्टि का सृष्टिकर्ता और संभालने वाला है; और कोई सृष्टिकर्ता परमेश्वर नहीं है। और इस कारण, परमेश्वर का अपनी सृष्टि पर अटल शासन रहा है और सदा रहेगा। भजन 93:1 और 2 पदों को देखें, जहाँ हम शाही सृष्टिकर्ता की इस स्तुति को पाते हैं:

> यहोवा राजा है; उसने माहात्म्य का पहिरावा पहना है;... और सामर्थ्य का फेंटा बान्धे है। इस कारण जगत स्थिर है, वह नहीं टलने का। हे यहोवा तेरी राजगद्दी अनादिकाल से स्थिर है, तू सर्वदा से है। (भजन 93:1-2)

इस संबंध में, पुराने नियम इस्राएल का विश्वास अपने पड़ोसियों के धर्मों से बहुत अलग था। पड़ोसी धर्म सामान्यत: सिखाते थे कि बहुत से देवताओं में सर्वोच्चता के लिए प्रतिस्पर्धा होती थी, और इन देवताओं की ताकत ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुसार कम या अधिक होती थी। कुछ मामलों में, देवता वर्ष के मौसम के चक्रों के अनुसार उठते और गिरते थे। अन्य मामलों में देवताओं का उत्थान और पतन युद्ध में उनका समर्थन प्राप्त देशों की जीत या हार पर निर्भर था।

परन्तु ये विचार बाइबल के विश्वास का भाग नहीं थे। यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, स्वर्गीय प्राणियों या तथाकथित देवताओं सहित सम्पूर्ण सृष्टि का एकमात्र सृष्टिकर्ता, संभालने वाला या शासक था। इस अर्थ में, परमेश्वर का सर्वोच्च राज्य अपरिवर्तनीय है। पूरी सृष्टि सदा से उसका राज्य रही है और सदा रहेगी।

अब, इस पर विश्वास करना जितना महत्वपूर्ण है, एक सामान्य अर्थ में, परमेश्वर ने सर्वदा सारी सृष्टि पर राज्य किया है, हमें दूसरे, संकीर्ण अर्थ को भी पहचानना चाहिए जिस में बाइबल बताती है कि परमेश्वर का राज्य विकासशील है।

विकासशील

इस संकीर्ण अर्थ में, परमेश्वर का राज्य विकसित होता है, उसमें उतार-चढ़ाव होता है, और अन्तत: वह इस बिन्दू तक बढ़ता है कि वह सम्पूर्ण संसार में फैल जाता है। और जैसा हम देखेंगे, जब बाइबल परमेश्वर के राजा होने और उसके राज्य के बारे में बात करती है, तो उसका अर्थ सामान्यत: ऐतिहासिक होता है। परमेश्वर के राज्य पर इस दृष्टिकोण को देखने का सबसे सुविधाजनक तरीका है प्रभु की प्रार्थना के आरम्भिक शब्दों को देखना। मत्ती 6:9 और 10 में अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाते समय यीशु ने सम्पूर्ण पुराने नियम का संक्षेपण इस प्रकार किया:

> "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है;
> तेरा नाम पवित्र माना जाए।
> तेरा राज्य आए,
> तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।" (मत्ती 6:9-10)

अब जबकि हम जानते हैं कि सामान्य अर्थ में परमेश्वर ने सदा से पृथ्वी सहित, सारी सृष्टि पर राज्य किया है, तो इन शब्दों पर हमें रूकना चाहिए। यीशु का क्या मतलब था जब उसने हमें इस प्रकार प्रार्थना करना सिखाया,-तेरा राज्य आए? जो पहले से ही है वह कैसे-आ सकता है?

एक शब्द में, यीशु पुराने नियम की शिक्षा की ओर संकेत करता है जिसमें परमेश्वर का ऐतिहासिक राज्य विकासशील है। उसने सिखाया कि परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर आता है और उसे रूपान्तरित करता है, जिससे पृथ्वी स्वर्ग के समान हो जाती है। देखें यीशु पुन: इसे मत्ती 6:9 और 10 में कहता है। प्राचीन इब्रानी काव्य की रीति का प्रयोग करते हुए, राज्य के बारे में यीशु के शब्दों में तीन समानान्तर रेखाएँ हैं।

पहले, उसने परमेश्वर के नाम को पवित्र मानने के लिए कहा। इसके विस्तार में, उसने बताया कि परमेश्वर का नाम तब पवित्र रहेगा जब परमेश्वर का राज्य आएगा। और फिर इस बात को समझाने के लिए कि राज्य के आने से उसका क्या अर्थ है, यीशु ने बताया परमेश्वर के राज्य के आने का अर्थ है पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा पूरी होना जैसी स्वर्ग में होती है।

यीशु ने हमें यह प्रार्थना करना सिखाया कि परमेश्वर अपने राज्य को पृथ्वी पर इस सीमा तक लाए कि पृथ्वी स्वर्ग के समान बन जाए, जिस से परमेश्वर का नाम हर जगह हमेशा पवित्र माना जाए। अब यीशु जानता था कि सम्पूर्ण पृथ्वी पहले से ही परमेश्वर के नियन्त्रण में है, परन्तु वह यह भी जानता था कि पुराने नियम ने वायदा किया था कि एक दिन परमेश्वर पृथ्वी को छुटकारा देगा, नया करेगा और सिद्ध बनाएगा जिससे यह स्वर्ग के आश्चर्य को प्रतिबिम्बित करे। और इसी अर्थ में यीशु ने अपने समय में कहा कि परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर आए। जहाँ तक यीशु का संबंध था, पृथ्वी पर और पृथ्वी के साथ कुछ होने वाला था। परमेश्वर अपने स्वर्गीय राज्य को विस्तार देने वाला था ताकि उसकी इच्छा यहाँ भी वैसे ही पूरी हो जैसे वहाँ होती है।

इस बात को समझने के लिए कि परमेश्वर की इच्छा को पृथ्वी पर कैसे पूरा किया जा सकता है जैसी वह स्वर्ग में है, हम दानिय्येल अध्याय 7 में दिए गए परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य के चित्र को देखेंगे। दानिय्येल 7:9 और 10 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> “मैं ने देखते देखते अन्त में क्या देखा, कि सिंहासन रखे गए, और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ; उसका वस्त्र हिम-सा उजला, और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे; उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिए धधकती हुई आग के से दिखाई पड़ते थे। उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी; फिर हजारों हजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों लाख लोग उसके सामने हाजिर थे।” (दानिय्येल 7:9-10)

स्वर्ग का यह चित्र असामान्य नहीं है। जब कभी पवित्र वचन परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन के बारे में बताता है तो हम इसी दृश्य को पाते हैं। परन्तु परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य के इस चित्र के कम से कम दो आयाम हैं जिनके बारे में हमें बताना चाहिए।

एक तरफ, स्वर्ग में राज्य करते समय वह अपनी विशेष महिमामय उपस्थिति में अपने आप को अपनी सृष्टि पर प्रकट करता है। जैसे पवित्र वचन सिखाता है, परमेश्वर सर्वव्यापी है; वह हर जगह है- परन्तु अपनी सर्वव्यापकता में वह अदृश्य है। स्वर्ग के सिंहासन कक्ष में, यद्यपि, उज्ज्वल श्वेत वस्त्रों को पहनकर, परमेश्वर अपने सिंहासन पर बैठता है जिसके बाल श्वेत ऊन के समान हैं। उसका सिंहासन अग्निमय है और उसके सिंहासन से धधकती हुई आग बहती है। सिंहासन पर परमेश्वर की विशेष उपस्थिति अद्‌भुत है; वह सबसे महिमामय रूप में प्रकट होता है; स्वर्ग उसके चकाचौंध करने वाले वैभव से भरा है।

अब स्वर्गीय सिंहासन पर परमेश्वर की महिमा की पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा से तुलना करें। पृथ्वी पर हम उसके अद्‌भुत स्वर्गीय वैभव का केवल धुँधला प्रतिबिम्ब देखते हैं। हाँ, हम सृष्टि के आश्चर्यों में परमेश्वर की महिमा के प्रतिबिम्ब को देखते हैं, परन्तु स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा की तुलना में यह कुछ भी नहीं है। अत:, जब यीशु ने प्रार्थना की कि परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर आए जैसा वह स्वर्ग में है, तो उसके मन में जो था उसका एक आयाम यह था कि परमेश्वर की विशेष उपस्थिति की अद्‌भुत चमक पृथ्वी में भर जाए जैसी स्वर्ग में है।

प्रेरित यूहन्ना के मन में भी यही था जब उसने नये यरूशलेम का वर्णन किया जो मसीह के लौटने पर स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरेगा। प्रकाशितवाक्य 21:23 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> उस नगर में सूर्य और चाँद के उजियाले की आवश्यकता नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उस में उजियाला हो रहा है, और मेमना उसका दीपक है। (प्रकाशितवाक्य 21:23)

अत:, जब यीशु ने हमें परमेश्वर के राज्य के स्वर्ग के समान पृथ्वी पर प्रकट होने के लिए प्रार्थना करना सिखाया, तो उसके मन में जो था उसका एक भाग यह है कि हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह अपने महिमामय, शाही तेज में पृथ्वी पर आए।

दूसरी तरफ, हमें यह देखने की भी आवश्यकता है कि परमेश्वर की उज्ज्वल, महिमामय उपस्थिति स्वर्गीय सिंहासन कक्ष में कुछ प्रभाव उत्पन्न करती है। जैसा हम दानिय्येल 7:10 में पढ़ते हैं:

> "हजारों हजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों लाख लोग उसके सामने हाजिर थे।" (दानिय्येल 7:10)

परमेश्वर के सिंहासन के सम्मुख असंख्य प्राणी उसकी सेवा टहल करते हैं, उसकी आराधना करते हैं, और नम्रता से उसकी आज्ञा को पूरा करते हैं।

परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति का प्रभाव परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य के पृथ्वी पर आने का दूसरा परिणाम है। पृथ्वी पर, इस समय परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करना आसान है। वास्तव में, यहाँ अधिकाँश प्राणी ऐसा ही करते हैं। परमेश्वर के शत्रु, आत्मिक और मानवीय दोनों, उसके राज्य का विरोध करते हैं। परन्तु एक दिन, जब मसीह लौटेगा और परमेश्वर की विशेष महिमामय उपस्थिति पृथ्वी पर आएगी, तो पृथ्वी पर के सब प्राणी या तो नाश हो जायेंगे या उसकी इच्छा को पृथ्वी पर उसी प्रकार पूरी करेंगे जैसे अब उसकी इच्छा स्वर्ग में पूरी होती है। इसी कारण प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पियों 2:10 में कहा:

> कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। (फिलिप्पियों 2:10)

अत: हम देखते हैं कि यीशु ने परमेश्वर के राज्य को एक विकासशील, ऐतिहासिक, सांसारिक वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत किया। उसने उस दिन की इच्छा की जब परमेश्वर की महिमा अपनी विशेष उपस्थिति में पृथ्वी पर इतनी स्पष्ट होगी कि उसकी इच्छा को पृथ्वी में उसी प्रकार पूरा किया जाएगा जैसा स्वर्ग में किया जाता है। और उसने हमें सिखाया कि हम उसके साथ भविष्य के उस दर्शन में सहभागी बनें।

अब जबकि हमने परमेश्वर के राज्य को वृहद् और संकीर्ण अर्थ में पहचान लिया है, तो हम यह देखने की स्थिति में हैं कि पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के विकास की खोज में पुराना नियम अपनी एकता को किस प्रकार पाता है। इस बिन्दू पर, उत्पत्ति 1:1-11:9 में परमेश्वर के राज्य को देखेंगे जिसे अक्सर प्राचीन इतिहास कहा जाता है।

प्राचीन इतिहास

प्राचीन इतिहास की जाँच करते समय, हम तीन मुद्दों को देखेंगे: पहला, बाइबल का यह भाग पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के स्थान को किस प्रकार परिभाषित करता है; दूसरा, यह परमेश्वर के राज्य के लोगों की पहचान किस प्रकार करता है; और तीसरा, यह परमेश्वर के सांसारिक राज्य की आरम्भिक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रगति का वर्णन किस प्रकार करता है। आइए पहले हम देखते हैं कि प्राचीन इतिहास परमेश्वर के राज्य का स्थान किस प्रकार निर्धारित करता है।

स्थान

उत्पत्ति के आरम्भिक अध्याय बताते हैं कि परमेश्वर ने किस प्रकार अपने राज्य के स्थान के रूप में पृथ्वी को स्थापित करना शुरू किया। हम देखेंगे कि परमेश्वर के महिमामय राज्य का यह भौगोलिक आयाम किस प्रकार दो चरणों में प्रकट किया गया है। पहला, हम देखेंगे कि परमेश्वर ने आरम्भ से ही पृथ्वी को अपने आगामी राज्य के लिए तैयार किया। और दूसरा, हम देखेंगे कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपने राज्य को एक केन्द्रिय स्थान में शुरू करने, और फिर सम्पूर्ण संसार को शामिल करने के लिए उसकी भौगोलिक सीमाओं को बढ़ाने की योजना बनाई। आइए पहले हम देखते हैं कि परमेश्वर ने आरम्भ में किस प्रकार पृथ्वी को अपने राज्य के निर्माण के लिए तैयार किया।

आरम्भिक तैयारियाँ

उत्पत्ति अध्याय 1 इस बात पर ध्यान देता है कि परमेश्वर ने आरम्भ में संसार को अपना राज्य बनने के लिए किस प्रकार तैयार किया। इस अध्याय का शीर्षक उत्पत्ति 1:1 में है:

> आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। (उत्पत्ति 1:1)

इस शीर्षक के बाद, उत्पत्ति 1:2-2:3 दिखाता है कि परमेश्वर ने तुरन्त पृथ्वी को तीन-स्तरीय संरचना में अपने महिमामय राज्य का स्थान बनाना शुरू कर दिया।

पहला, सृष्टि की कहानी उत्पत्ति 1:2 में संसार की अव्यवस्था और परमेश्वर द्वारा उस अव्यवस्था के विरूद्ध कार्य करने की तैयारी से शुरू होती है। देखें इस पद में पृथ्वी का वर्णन किस प्रकार किया गया है:

> पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था; तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था। (उत्पत्ति 1:2)

इस पद में दो महत्वपूर्ण बातें कही गई हैं। एक तरफ, पृथ्वी-बेडौल और सुनसान थी, गहरे जल पर अन्धियारा था। इस बिन्दू पर, पृथ्वी आवास के लिए एक मनोहर स्थान नहीं थी; आदर्श स्थान नहीं थी। बेडौल और सुनसान शब्दों का पुराने नियम में दूसरे स्थानों पर जंगल और मरूभूमि के लिए प्रयोग किया गया है, ऐसे स्थान जो मनुष्यों के आवास के लिए योग्य नहीं हैं। और इसके अतिरिक्त,- अन्धकार और -गहराई के, पवित्र वचन में बहुत नकारात्मक अर्थ हैं। आरम्भ में, पृथ्वी प्रतिकूल और जीवन से रहित थी।

परन्तु दूसरी तरफ, पद 2 हमें पृथ्वी के इतिहास के आरम्भ के बारे में दूसरे आवश्यक तथ्य के बारे में भी बताता है:-परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था। ज्योति और जीवन का परमेश्वर पृथ्वी को अपनी आरम्भिक अव्यवस्थित अवस्था में छोड़ने से सन्तुष्ट नहीं था। वह अन्धकार, मृत सृष्टि के विरूद्ध कार्य करने के लिए तैयार था।

सृष्टि के अभिलेख का दूसरा भाग, उत्पत्ति 1:3-31 में दिए गए आदेश के छह दिन हैं। ये पद बताते हैं कि परमेश्वर ने किस प्रकार संसार को अपना राज्य बनने के अनुरूप बनाया। बहुत से व्याख्याकारों ने बताया है ये छह दिन एक स्पष्ट नमूने को प्रदर्शित करते हैं जो अपनी सृष्टि को बनाने में परमेश्वर की बुद्धि और उद्देश्यों को दिखाता है।

पहले तीन दिन परमेश्वर इस तथ्य से निपटता है कि संसार बेडौल था। बाद के तीन दिनों में वह इस तथ्य से निपटता है कि संसार सुनसान था। इससे बढ़कर, तीन दिनों के इन दो समूहों में परमेश्वर के कार्य असाधारण रूप से एक-दूसरे के समानान्तर हैं। पहले दिन परमेश्वर ने दिन को बनाया और अन्धकार को रात तक सीमित कर दिया। और तद्नुरूप, इस क्रम को बनाए रखने के लिए उसने चौथे दिन आकाश में सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्रों को स्थापित किया। दूसरे दिन परमेश्वर ने ऊपर के जल और नीचे के जल में अन्तर करते हुए वायुमण्डल को बनाया। फिर पाँचवें दिन, परमेश्वर ने ऊपर और नीचे के जल के बीच आकाश को भरने के लिए पक्षियों को बनाया, नीचे के जल को भरने के लिए समुद्री जीवों को बनाया। तीसरे दिन परमेश्वर ने हरी-भरी उपजाऊ भूमि को बनाने के द्वारा गहरे जल का स्थान निर्धारित किया। और छठे दिन, परमेश्वर ने पृथ्वी को भरने के लिए जीवों और मनुष्य को बनाया। संसार को अव्यवस्था से आश्चर्यजनक क्रमबद्ध संसार में रूपान्तरित करने के लिए बोलते समय परमेश्वर ने अतुल्य बुद्धि और सामर्थ का प्रदर्शन किया।

अब, हमें 3:31 पदों में बार-बार दोहराए गए विषय पर विशेष ध्यान देना चाहिए। विशेषत:, उत्पत्ति अध्याय 1 हमें बताता है कि जब परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को देखा, तो उसने पाया कि सब अच्छा था। और पद 31 में, छठे दिन उसने अपने कार्य को देखा कि वह बहुत अच्छा था।

अब, जब बाइबल कहती है कि सृष्टि अच्छी थी, तो इसका आँशिक अर्थ है, कि परमेश्वर ने नैतिक अर्थ में अपने कार्य का अनुमोदन किया क्योंकि उसने महत्वपूर्ण रूप से अव्यवस्था, अन्धकार और गहराई को सीमित कर दिया था, और उसने संसार को एक क्रम प्रदान किया था। परन्तु अनुवादित शब्द -अच्छा, इब्रानी में तोव, का अर्थ इससे कहीं अधिक है। यहाँ और पुराने नियम में अन्य स्थानों पर इसका अर्थ-मनोहर, -सुखद, और -खूबसूरत भी है। छह दिनों में, परमेश्वर ने संसार को बदल दिया कि वह उसकी इच्छा और आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करे, और उसे एक खूबसूरत स्थान बनाया जिससे वह आनन्दित हुआ।

इसी कारण उत्पत्ति 2:1-3 में सृष्टि के अभिलेख का तीसरा भाग सब्त के बारे में इस प्रकार बात करता है। उत्पत्ति 1 के आरम्भ में परमेश्वर सृष्टि से असन्तुष्ट था। परन्तु उत्पत्ति 2:1-3 में परमेश्वर अपने कार्य से प्रसन्न हुआ। वास्तव में, परमेश्वर पृथ्वी के आरम्भिक प्रबन्ध से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने अपने कार्य से विश्राम किया और सातवें, या सब्त के दिन को पवित्र ठहराया। एक शब्द में, परमेश्वर सन्तुष्ट था कि उसकी आरम्भिक तैयारियों ने पृथ्वी को ऐसा स्थान बनने के पथ पर अग्रसर किया जैसा वह चाहता था।

जैसा हमने देखा, परमेश्वर ने आरम्भ में पृथ्वी को एक ऐसे स्थान के रूप में तैयार किया जिस से वह प्रसन्न हुआ, परन्तु हमें यह भी देखने की आवश्यकता है कि पृथ्वी के लिए परमेश्वर के वृहद् उद्देश्यों में और अधिक विकास की आवश्यकता थी।

निरन्तर विस्तार

सृष्टि के पहले सप्ताह में परमेश्वर द्वारा किए गए सारे कार्य के बावजूद, उसने सम्पूर्ण संसार को एक अद्‌भुत स्वर्ग में नहीं बदला था। उत्पत्ति अध्याय 2 इस तथ्य की ओर ध्यान खींचता है कि जब सम्पूर्ण संसार कुछ हद तक क्रमबद्ध हो गया था, लेकिन पृथ्वी पर वास्तव में एक ही स्थान था जिसे स्वर्ग कहा जा सकता था। देखें उत्पत्ति 2:8-9 किस प्रकार इस स्थान का वर्णन करता है:

> और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन में एक वाटिका लगाई, ...और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भाँति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे थे, उगाए, और वाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया। (उत्पत्ति 2:8-9)

इसे इस प्रकार सोचें। जिस प्रकार एक चित्रकार चित्र बनाने से पहले कैनवास पर पेन्सिल से रेखाचित्र बनाता है वैसा ही परमेश्वर ने सम्पूर्ण पृथ्वी पर किया। उसने तुरन्त ही पृथ्वी के सम्पूर्ण कैनवास पर चित्र नहीं बनाया; उसने केवल अपनी इच्छा के अनुसार एक मूलभूत क्रम स्थापित किया और दिशा निर्धारित की। परन्तु चित्र पूर्ण नहीं था।

लेकिन, परमेश्वर ने पृथ्वी के एक भाग का चित्र ख़ूबसूरत रंगों से बनाया और उसे अपनी सृष्टि के केन्द्र के रूप में संवारा। पृथ्वी का वह क्षेत्र अदन कहलाता था, इब्रानी में जिसका अर्थ है - सुहावना या - मनोहर, और वह क्षेत्र परमेश्वर की विशेष प्रसन्नता का कारण था। अदन के केन्द्र में एक वाटिका थी, एक आश्चर्यजनक रूप से ख़ूबसूरत स्थान, एक विशिष्ट मरूद्यान, राजा के लिए उपयुक्त एक अद्‌भुत स्वर्गीय वाटिका। यद्यपि परमेश्वर अपनी सृष्टि में सर्वव्यापी था, अदृश्य रूप में हर स्थान पर विद्यमान था, लेकिन उसने अपनी दृश्य उपस्थिति के विशेष स्थान के रूप में अदन के देश को, विशेषत: उसके बीच की अदन की वाटिका को चुना। यह वह स्थान था जहाँ परमेश्वर स्वयं को पृथ्वी पर महिमामय रूप में प्रकट करता था। परन्तु यह वाटिका और यह देश पृथ्वी के बहुत ही छोटे भाग थे। शेष संसार कुछ अंश तक क्रमबद्ध हो गया था, परन्तु उस में अब भी बहुत कुछ किया जाना था।

अब जबकि हम यह देख चुके हैं कि किस प्रकार परमेश्वर ने पहले अदन और उसके ख़ूबसूरत तथा भव्य केन्द्र पवित्र बगीचे के साथ पृथ्वी को अपने शासन के स्थान के रूप में तैयार किया, तो हमें प्राचीनकाल में अपने दूसरे बिन्दू पर आना चाहिए: परमेश्वर के राज्य के लोग। उस समय, परमेश्वर ने मनुष्य जाति को अपने सेवक नियुक्त किया, और वे औजार जिनके द्वारा वह पृथ्वी को अपना राज्य बनाने की तैयारियों को पूर्ण करेगा।

लोग

मनुष्य की विशेष भूमिका परमेश्वर द्वारा मनुष्य को दी गई टिप्पणियों से स्पष्ट हो जाती है जिसे उसने अदन की वाटिका में रखा था। यद्यपि सृष्टि के लिए उसके आरम्भिक क्रम में सब कुछ अच्छा-बहुत अच्छा रहा था - उत्पत्ति 2:18 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> परमेश्वर यहोवा ने कहा, “आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिए एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उस से मेल खाए।” (उत्पत्ति 2:18)

परमेश्वर, जिसने कहा था कि उसकी सृष्टि -अच्छी थी, उसने पाया कि उसकी विशेष, पवित्र वाटिका में कुछ ऐसा था जो - अच्छा नहीं था - आदम के पत्नी नहीं थी। परन्तु यह अच्छा क्यों नहीं था? एक शब्द में, परमेश्वर ने मानव जाति को एक कार्य के लिए बनाया था जो एक प्राणी के लिए बहुत बड़ा था।

हम मनुष्य की भूमिका के दो प्रकार से वर्णन पर ध्यान देने के द्वारा देख सकते हैं कि यह कार्य इतना बड़ा क्यों था। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को याजकों और उसके सह-शासकों या शाही प्रतिनिधियों के रूप में उसकी सेवा करने के लिए बनाया था।

याजक

सबसे पहले, आदम और हव्वा को याजक का कार्य दिया गया। उन्हें आराधना की क्रिया द्वारा परमेश्वर की सेवा टहल करने और उसका सम्मान करने के लिए बुलाया गया था। हम पहले ही देख चुके हैं कि स्वर्ग के सिंहासन कक्ष में प्राणी यही करते हैं; और आदम और हव्वा को पृथ्वी पर यही करना था। उत्पत्ति 2:15 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे। (उत्पत्ति 2:15)

पहली नजर में, हम सोच सकते हैं कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को केवल वाटिका के रख-रखाव के लिए नियुक्त किया था, परन्तु वे इससे कहीं अधिक थे। वास्तव में, उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे की अभिव्यक्ति असामान्य है और इसका मूसा और इस्राएलियों के लिए विशेष महत्व था जिन्होंने इस कहानी को सबसे पहले पढ़ा था।

उदाहरण के लिए, गिनती 3:8 में परमेश्वर के मिलापवाले तम्बू में याजकों या लेवियों के कार्य का वर्णन करने के लिए ऐसी ही अभिव्यक्ति का प्रयोग किया गया है। वहाँ हम पढ़ते हैं:

> "वे मिलापवाले तम्बू के कुल सामान की और इस्राएलियों की सौंपी हुई वस्तुओं की भी रक्षा करें, इस प्रकार वे तम्बू की सेवा करें।" (गिनती 3:8)

वाटिका में आदम और हव्वा की भूमिका का वर्णन इस प्रकार किया गया है जो परमेश्वर की याजकीय सेवा में लेवियों की भूमिका के इस तकनीकी वर्णन को प्रतिबिम्बित करता है।

आदम और हव्वा को परमेश्वर की पवित्र वाटिका, पृथ्वी पर दिव्य राजा की विशेष उपस्थिति के स्थान में रखा गया, जो बहुत कुछ मूसा के समय के मिलापवाले तम्बू के समान ही था। और वे पवित्र वाटिका को खूबसूरत बनाने और उसकी रखवाली करने के द्वारा महान राजा की आराधनापूर्ण सेवा में याजकीय कार्य को करते थे। परमेश्वर के पवित्र निवासस्थान में कार्य करते समय आदम और हव्वा परमेश्वर के याजकों के रूप में कार्य करते थे।

सह-शासक

दूसरा, आदम और हव्वा को परमेश्वर के सह-शासकों के राजकीय रूप में भी नियुक्त किया गया था। वे शाही याजक थे। आदम और हव्वा के इस वर्णन को हम उत्पत्ति 1:26 में पाते हैं जहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> फिर परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।" (उत्पत्ति 1:26)

अब हम सब जानते हैं कि यह और अन्य पद्यांश मनुष्यों को-परमेश्वर का स्वरूप या समानता कहते हैं। अतीत में, धर्मविज्ञानी सामान्यत: सोचते थे कि इसका अर्थ है कि मनुष्य विवेकपूर्ण, नैतिक प्राणी है। परन्तु उत्पत्ति अध्याय 1 का बल इस बात पर नहीं है।

परमेश्वर के स्वरूप में होने के महत्व को समझने के लिए, यह जानना सहायक है कि पुराने नियम के प्राचीन संसार में, इस्राएल और पड़ोसी देशों में राजाओं और शासकों का ईश्वरों का स्वरूप, समानता, और यहाँ तक कि पुत्र कहलाना सामान्य था। राजाओं और शासकों को ये नाम इसलिए प्राप्त हुए थे क्योंकि पुराने नियम के समयों में, लोगों का विश्वास था कि शाही व्यक्तियों की संसार में बहुत ही विशेष भूमिका थी जो उन्हें साधारण मनुष्यों से अलग करती थी। और उन दिनों में यह समझा जाता था कि राजा स्वर्ग और पृथ्वी के बीच खड़े हैं, और यह माना जाता था कि राजाओं और शासकों का यह विशेष कार्य था कि वे स्वर्ग के ईश्वरों की इच्छा या बुद्धि को सीखकर उस स्वर्गीय इच्छा को अपनी शाही सामर्थ के प्रयोग द्वारा पृथ्वी पर लागू करें। प्रभु की प्रार्थना में यीशु की भाषा में, राजाओं को स्वर्ग में परमेश्वर की इच्छा को जानकर उस इच्छा को पृथ्वी पर लाना था।

अब, हम देख सकते हैं कि मूसा अपने समय में अति उग्र था क्योंकि उसने घोषणा की कि सारे मनुष्य-केवल राजा और शासक ही नहीं-परमेश्वर का स्वरूप थे। पुराने नियम के अनुसार, सारे मनुष्यों को परमेश्वर की ओर से पृथ्वी पर राज्य करने और इस बात को सुनिश्चित करने के लिए परमेश्वर के सह-शासकों के रूप में चुना गया था कि उसकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो, जिस प्रकार प्राचीन राजाओं के बारे में माना जाता था कि वे अपने देवताओं की ओर से राज्य करते थे।

यह शाही कल्पना बताती है कि परमेश्वर ने उत्पत्ति 1:27 और 28 में मनुष्य की भूमिका का इस प्रकार वर्णन क्यों किया। देखें मूसा ने इन पदों में क्या लिखा है:

> तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।" (उत्पत्ति 1:27-28)

हम परमेश्वर के स्वरूप के लिए इस शाही भूमिका को संक्षेप में इस प्रकार बता सकते हैं। जैसा हम देख चुके हैं, परमेश्वर ने सृष्टि में क्रम और सुन्दरता का एक नाप स्थापित किया, और उसने मनुष्य को अपनी आश्चर्यजनक, पवित्र वाटिका में रखा कि वे याजकों के रूप में उसकी सेवा करें। परन्तु परमेश्वर ने अपने शाही स्वरूप से कहा कि वह संख्या में बढ़े और न केवल अदन की वाटिका में बल्कि सम्पूर्ण पृथ्वी में फैल जाए। और उसने उन्हें न केवल अदन की वाटिका पर, बल्कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर अधिकार करने के लिए नियुक्त किया।

स्वर्ग के महान राजा ने मनुष्यों को अपने राज्य के विस्तार के उपकरण के रूप में नियुक्त किया। मनुष्यों को बढ़ना, फैलना, और सम्पूर्ण पृथ्वी को परमेश्वर की वाटिका में बदलना था जिस से वे परमेश्वर की इच्छा को पृथ्वी पर ला सकें और संसार भर में याजकों के रूप में उसकी सेवा कर सकें। सम्पूर्ण संसार में परमेश्वर के राज्य का विस्तार करना ही वह उद्देश्य था जिसके लिए परमेश्वर ने मनुष्य को पृथ्वी पर रखा था।

अब जबकि हम यह देख चुके हैं कि परमेश्वर ने आरम्भ में ही अपने राज्य के लिए लोगों और एक स्थान को स्थापित किया, तो हम इस स्थिति में हैं कि प्राचीन काल के दौरान परमेश्वर के सांसारिक राज्य की प्रगति को चित्रित कर सकें।

प्रगति

हम इस समय के मूसा के अभिलेख को संक्षेप में तीन प्रकार से बतायेंगे। सबसे पहले, हम महान राजा के विरूद्ध हुए वैश्विक विश्वासघात के बारे में बात करेंगे। दूसरा, हम देखेंगे कि किस प्रकार मनुष्य की दुष्टता अकल्पनीय रूप से बढ़ गई, जिस कारण भयानक दण्ड आया। परन्तु तीसरा, हम देखेंगे कि मनुष्य की असफलताओं के बावजूद पृथ्वी पर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए परमेश्वर ने दीर्घावधि रणनीति को प्रकट किया। आइए सबसे पहले उस विश्वासघात की ओर देखें जो पृथ्वी पर हुआ।

वैश्विक विश्वासघात

परमेश्वर की इच्छा को सम्पूर्ण पृथ्वी पर लाने के विपरीत, आदम और हव्वा ने शैतान की परीक्षा के सामने घुटने टेक दिए और निषेधित फल को खाने के द्वारा अपने दिव्य राजा के विरूद्ध विद्रोह किया। परिणामस्वरूप, उन्हें अदन से निकाल दिया गया और शाप उनके जीवन पर आ पड़ा।

परन्तु, परमेश्वर के राज्य के निर्माताओं के रूप में मनुष्यों की भूमिका पूर्णत: समाप्त नहीं हुई। आदम और हव्वा को अब भी परमेश्वर की आराधना करनी थी; उन्हें अब भी बढ़ना और अधिकार करना था। लेकिन, अपने विद्रोह के कारण, उन पर और पृथ्वी पर शाप पड़ा जिस से बढ़ना और अधिकार करना कठिन, कुण्ठाजनक और दर्दनाक बन गया। बढ़ने के संबंध में, परमेश्वर ने उत्पत्ति 3:16 में हव्वा से ये शब्द कहे:

> "मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी।" (उत्पत्ति 3:16)

और उसने अधिकार के संबंध में उत्पत्ति 3:17 में आदम को यह निर्देश दिया:

> "भूमि तेरे कारण शापित है। तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा।" (उत्पत्ति 3:17)

तुलनात्मक आसानी और कभी न समाप्त होने वाले सम्मान के साथ परमेश्वर के स्वरूप के रूप में अपने कार्य को पूरा करने के विपरीत, मनुष्य को एक शत्रुतापूर्ण संसार में रहने, और परमेश्वर के स्वरूप के रूप में जीवन बिताने में कष्ट और व्यर्थता का अनुभव करने के लिए विवश होना पड़ा।

दुष्टता और न्याय

दूसरा, प्राचीनकाल के दौरान मनुष्य निरन्तर दुष्टता में आगे बढ़ता रहा और परमेश्वर का भयानक दण्ड उन पर आ पड़ा। मानव जाति के पाप में गिरने से पूर्व, सन्तानोत्पत्ति के द्वारा बहुत से विश्वासयोग्य सह-शासकों और याजकों के स्वरूपों को उत्पन्न किया जा सकता था। परन्तु जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तो इस बात में कोई सच्चाई नहीं रह गई थी कि उनके सारे शारीरिक वंशज परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होंगे। वास्तव में, अपनी गिरी हुई प्रकृति के कारण, परमेश्वर द्वारा पाप की सामर्थ से छुटकारा दिए बिना उन में से कोई भी विश्वासयोग्य नहीं बन सकता था।

दुःखद रूप से, मानव जाति का बहुसंख्य भाग निरन्तर परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करता रहा। आदम और हव्वा के प्रथम पुत्र, कैन ने अपने भाई हाबिल की हत्या कर दी। और जैसे उत्पत्ति अध्याय चार में कैन की वंशावली हमें बताती है, जब कैन का परिवार बढ़ा और उन्होंने पृथ्वी पर अधिकार कर लिया तो उनकी दुष्टता भी बढ़ती गई। मानवीय संस्कृति को परमेश्वर के शाही याजकों के समान बनाने, परमेश्वर की आराधना करने, और उसकी इच्छा को पृथ्वी पर फैलाने के विपरीत, कैन के वंशजों ने अपने आप को ऊँचा किया और ऐसी संस्कृतियों को बनाया जो परमेश्वर के शासन के विरूद्ध थी। वास्तव में, समय बीतने के साथ, मनुष्य इतना दुष्ट हो गया कि परमेश्वर ने मानव जाति को नाश करने का निर्णय लिया। जैसा हम उत्पत्ति 6:5-7 में पढ़ते हैं:

> यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है। और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ। तब यहोवा ने कहा, "मैं मनुष्य को जिसकी मैं ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूँगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूँगा, क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूँ।" (उत्पत्ति 6:5-7)

दीर्घावधि रणनीति

तीसरा, प्राचीनकाल का इतिहास हमें बताता है कि परमेश्वर ने अपने राज्य को सारे संसार में विस्तार देने के लिए दीर्घावधि रणनीति को बनाया। वास्तव में, मानव जाति की दुष्टता के साथ, परमेश्वर ने

मनुष्यों के एक चुने हुए समूह को पाप के अधिकार से छुड़ाकर, उनके द्वारा अपने राज्य को बनाने का निर्णय लिया। परमेश्वर ने इन स्वरूपों पर करूणा की जिस से वे उसके उद्देश्यों को पूरा करें।

इस दीर्घावधि रणनीति का पहला संकेत उत्पत्ति 3:15 में आदम और हव्वा के पाप करने के तुरन्त बाद दिया गया। वहाँ परमेश्वर ने इन शब्दों में सर्प को शाप दिया, जिसने आदम और हव्वा को पाप करने के लिए उकसाया था:

> "और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।" (उत्पत्ति 3:15)

मूलत:, परमेश्वर ने वायदा किया कि यद्यपि शैतान और उसका अनुसरण करने वाले मनुष्य हव्वा की सन्तान को परेशान करते रहेंगे, परन्तु अन्तत:, उसके सच्चे वंशज, छुटकारा पाए हुए मनुष्य, उनसे वैश्विक विश्वासघात करवाने वाले पर जय प्राप्त करते हुए सर्प के सिर को कुचल देंगे। इसी कारण रोमियों 16:20 में पौलुस रोम के मसीहियों को दिलासा देता है:

> शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा। (रोमियों 16:20)

छुटकारे की यह आशा आदम और हव्वा के समय से हमारे समय तक चली आ रही है।

कैन की वंशावली के विपरीत जो दुष्टता में बढ़ती गई, एक तीसरे पुत्र, सेत ने विश्वासयोग्य हाबिल के स्थान पर जन्म लिया। जैसा कि उत्पत्ति 5 की वंशावली हमें बताती है, सेत और उसके वंशजों ने परमेश्वर की इच्छा को पृथ्वी पर लाने के प्रयास में परमेश्वर का सम्मान किया। पृथ्वी की दशा इतनी बिगड़ गई कि परमेश्वर ने जल-प्रलय के द्वारा सारे संसार को नष्ट कर दिया, लेकिन सेत का एक वंशज, नूह, विश्वासयोग्य था और उसने परमेश्वर का अनुग्रह पाया, और परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार को जल-प्रलय से बचा लिया जब उसने शेष संसार को नष्ट कर दिया।

अब, प्राचीन इतिहास के अन्त के समीप उत्पत्ति 8:21 और 22 में परमेश्वर ने एक दीर्घावधि, जटिल रणनीति का मार्ग निकाला जिसके द्वारा उसके छुड़ाए हुए स्वरूप परमेश्वर के स्वरूप के रूप में अपने उद्देश्यों को पूरा करेंगे। वहाँ हम पढ़ते हैं:

> "मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूँगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है; तौभी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूँगा। अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएँगे।" (उत्पत्ति 8:21-22)

परमेश्वर की प्रेरणा पर ध्यान दें। उसने पहचान लिया कि छुड़ाए हुए मनुष्य भी पापी और निर्बल हैं। उसे पता था कि पाप उसके गिरे हुए स्वरूप को निरन्तर बर्बाद करता रहेगा। इसलिए, स्वर्ग के राजा ने अपनी सृष्टि का प्रबन्ध किया कि वह मानव जाति के लिए दीर्घकालीन स्थिरता प्रदान करे। इस स्थिरता का कारण उत्पत्ति 9:1 में स्पष्ट हो जाता है:

> फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीष दी और उनसे कहा, "फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ।" (उत्पत्ति 9:1)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

एक शब्द में, परमेश्वर ने प्रकृति को स्थिर किया और संसार भर में जल-प्रलय की आशंका को दूर किया ताकि उसके छुड़ाए हुए स्वरूप मानवता के मूल कार्य को पूरा कर सकें।

परमेश्वर उन सब बातों को जानता था जिसे शेष पवित्र वचन स्पष्ट करता है। उसके राज्य का विस्तार करने का मार्ग सीधा और अवरोधरहित नहीं होगा। वह जानता था कि उसके अपने लोग लड़खड़ाकर गिरेंगे, और वह जानता था कि उसके राज्य के सेवकों का विरोध कम और ज्यादा होता रहेगा। इसलिए उसने प्रकृति में दीर्घकालीन स्थिरता के लिए एक नया क्रम स्थापित किया जिस से सुदूर भविष्य में एक दिन, उसके छुड़ाए हुए लोग, उसके विश्वासयोग्य स्वरूप, उसके राज्य को इस सम्पूर्ण गिरे हुए संसार में फैलाने के कार्य को पूरा कर सकें।

परमेश्वर का ऐतिहासिक राज्य अदन में आरम्भ हुआ और उसे परमेश्वर के याजकीय और शाही स्वरूप, मानव जाति द्वारा सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैलाया जाना था। पाप के कारण उत्पन्न हुई जटिलताओं के बावजूद, परमेश्वर ने अपने कुछ स्वरूपों को छुड़ाने के लिए एक दीर्घकालीन ऐतिहासिक रणनीति बनाई जिस से वे परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर ला सकें जैसा वह स्वर्ग में है। प्राचीन इतिहास की इन मूलभूत रूपरेखाओं ने शेष मसीही इतिहास की दिशा को निर्धारित किया।

अब जबकि हम यह देख चुके हैं कि पृथ्वी के इतिहास के आरम्भिक वर्षों के दौरान किस प्रकार परमेश्वर के राज्य की शुरूआत हुई, तो हम अगले बड़े ऐतिहासिक चरण पर जाने के लिए तैयार हैं जिस में पुराने नियम का अधिकाँश भाग शामिल है, वह समय जब परमेश्वर ने विशेष रूप से अपने चुने हुए लोगों के रूप में इस्राएल के साथ व्यवहार किया।

इस्राएल जाति

पुराने नियम के दृष्टिकोण से, प्राचीन इस्राएल जाति का इतिहास परमेश्वर के राज्य को स्वर्ग के अनुरूप पृथ्वी पर लाने में एक लम्बी छलांग का प्रतिनिधित्व करता है।

प्राचीन इस्राएल में परमेश्वर के राज्य के विकास को देखने के लिए, हम फिर से तीन शीर्षकों को देखेंगे: पहला, इतिहास की इस अवस्था के दौरान हम राज्य के स्थान को देखेंगे; दूसरा, हम राज्य के लोगों को देखेंगे; और तीसरा, इस समय के दौरान में राज्य की प्रगति की जाँच करेंगे। आइए पहले हम इस्राएल जाति में परमेश्वर के राज्य के स्थान को देखते हैं।

स्थान

इस काल में परमेश्वर के राज्य के स्थान की चर्चा को शुरू करने का सर्वोत्तम मार्ग इस्राएल के महान पुरखे, अब्राहम से शुरू करना है। चूंकि अब्राहम इस्राएल का पिता था, इसलिए अब्राहम के साथ परमेश्वर के व्यवहार ने इस्राएल के साथ परमेश्वर के व्यवहार की दिशा तय की। उत्पत्ति 12:1-3 में हम पढ़ते हैं किस प्रकार परमेश्वर ने पहली बार अब्राहम को इन शब्दों के साथ अपना विशेष सेवक बनने के लिए बुलाया:

> "अपने देश, और अपने कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और तो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।" (उत्पत्ति 12:1-3)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ध्यान दें परमेश्वर ने पद 1 में क्या कहा- परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि वह अपने देश मेसोपोटामिया को छोड़कर एक ऐसे देश में जाए जिसे अब्राहम ने अभी तक नहीं देखा था।

अब, जैसे-जैसे उत्पत्ति अध्याय 12 आगे बढ़ता है, हम देखते हैं कि परमेश्वर अब्राहम को दक्षिणी मेसोपोटामिया के ऊर से उत्तरी मेसोपोटामिया के हारान में लाया, और बाद में हारान से कनान देश में लाया, जिसे अब हम पवित्र देश कहते हैं। और जब अब्राहम कनान में पहुँचा, परमेश्वर ने पुष्टि की कि यह भूमि अब्राहम के वंशजों को प्राप्त होगी, और जैसा कि शेष पुराना नियम स्पष्ट करता है, उस समय के बाद से अब्राहम के वायदे की भूमि संसार में परमेश्वर की गतिविधियों का केन्द्र बन गई।

वायदे के देश की ओर अब्राहम की बुलाहट परमेश्वर के राज्य के स्थान को समझने में कम से कम दो प्रकार से हमारी सहायता करती है: पहला, हम देखेंगे कि परमेश्वर ने अब्राहम और इस्राएल को बुलाया कि वे उसके राज्य के मूल केन्द्र में उसकी सेवा करें; दूसरा, हम देखेंगे कि परमेश्वर ने इस्राएल को इसलिए बुलाया कि वह उसके राज्य को इस मूल केन्द्र से आगे फैलाए। आइए पहले हम इस विचार को देखते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों को इसलिए बुलाया कि वे उसके राज्य के मूल केन्द्र में उसकी सेवा करें।

मूल केन्द्र

जैसा हम देख चुके हैं, परमेश्वर के सांसारिक राज्य का मूल केन्द्र अदन था। दुर्भाग्यवश, बहुत से व्याख्याकारों का यह गलत विश्वास है कि अदन मेसोपोटामिया में था। और इसी कारण, वे गलत रूप से यह विश्वास भी करते हैं कि अब्राहम वास्तव में अदन की वाटिका के क्षेत्र को छोड़कर कनान के देश की ओर जाता है। परन्तु पवित्र वचन अब्राहम के वायदे के देश और अदन के देश के बीच बहुत निकट संबंध को चित्रित करता है।

वास्तव में, परमेश्वर ने अब्राहम को अदन की वाटिका के क्षेत्र से दूर नहीं किया बल्कि उसके निकट बुलाया। देखें परमेश्वर उत्पत्ति 2:10-14 में अदन की वाटिका की सीमाओं का किस प्रकार वर्णन करता है:

> "उस वाटिका को सींचने के लिए एक महानदी अदन से निकली और वहाँ से आगे बहकर चार धाराओं में बँट गई। पहली धारा का नाम पीशोन है; यह वही जो हवीला नाम के सारे देश को जहाँ सोना मिलता है, घेरे हुए है। उस देश का सोना चोखा होता है; वहाँ मोती और सुलैमानी पत्थर भी मिलते हैं। दूसरी नदी का नाम गीहोन है; यह वही है जो कूश के सारे देश को घेरे हुए है। और तीसरी नदी का नाम हिद्देकेल है; यह वही है जो अश्शूर के पूर्व की ओर बहती है। और चौथी नदी का नाम फरात है।" (उत्पत्ति 2:10-14)

चार नदियाँ अदन की सीमाओं को बनाती हैं: पीशोन और गीहोन, जो उत्तर-पूर्वी मिस्र के क्षेत्र में दक्षिण-पूर्वी देशों से, और हिद्देकेल और फरात उत्तर-पूर्वी कनान से जुड़ी हैं।

ये भौगोलिक उल्लेख हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वायदे के देश की भी ऐसी ही सीमाएँ थीं। उत्पत्ति 15:18 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> "मिस्र के महानद से लेकर फरात नामक बड़े नद तक जितना देश है... मैं ने तेरे वंश को दिया है।" (उत्पत्ति 15:18)

अब, अधिकाँश व्याख्याकार सहमत हैं कि-मिस्र की नदी नील नहीं है, बल्कि उत्तर-पूर्वी मिस्र की छोटी नदियों में से एक है। परन्तु चाहे जो भी हो, परमेश्वर ने अब्राहम से उस देश का वायदा किया जिसकी उत्तर-पूर्वी सीमा पर फरात, और दक्षिण-पश्चिम में मिस्र था, और जैसा हमने देखा है, वायदे के देश की

भौगोलिक सीमाएँ अदन की सीमाओं को प्रतिबिम्बित करती हैं। यद्यपि कुछ प्रश्न बने रहते हैं कि हमें कितनी निकटता से कनान को अदन के साथ जोड़ना चाहिए, लेकिन कम से कम यह स्पष्ट है कि जब परमेश्वर ने अब्राहम को कनान के लिए बुलाया, तो उसने उसे पुन: उस क्षेत्र की ओर बुलाया जहाँ पहले आदम और हव्वा परमेश्वर की सेवा करते थे। अत:, आरम्भ में जिस प्रकार अदन को पृथ्वी पर परमेश्वर की उपस्थिति के केन्द्र के रूप में स्थापित किया गया था, प्राचीन इतिहास की असफलताओं के बाद, परमेश्वर ने अपने विशेष सेवक अब्राहम को राज्य का पुनर्निर्माण शुरू करने के लिए पुन: उसी भौगोलिक क्षेत्र की ओर बुलाया।

वायदे के देश और अदन के बीच के संबंध का दूसरा आशय यह है कि परमेश्वर ने पुराने नियम इस्राएल को वह भूमि अपने आप में एक अंतिम परिणाम के रूप में नहीं दी थी, बल्कि पृथ्वी के अन्त तक उसके राज्य को बढ़ाने के लिए एक स्थान के रूप में दी थी।

विस्तार

वायदे का देश अब्राहम और इस्राएल के लिए अन्तिम भौगोलिक लक्ष्य नहीं था-यह पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के लिए अत्यधिक छोटा था। उत्पत्ति 12:3 को पुन: देखें:

> "जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।" (उत्पत्ति 12:3)

अब्राहम और उसके वंश के प्रति जातियों की प्रतिक्रिया के जवाब में उन्हें आशीष देने और शाप देने की प्रक्रिया में, अन्तत: पृथ्वी के सारे लोग आशीष पाएँगे। यह वायदा केवल इस बात के बारे में नहीं बता रहा है कि कैस अब्राहम का विश्वास-और अब मसीही विश्वास-विभिन्न गोत्रों और भाषा समूहों में फैलेगा, यद्यपि यह वायदे का एक पहलू है। यह पद स्थान के बारे में भी बताता है। अब्राहम की आशीष पृथ्वी भर में सारे परिवारों तक पहुँचेगी।

इसी कारण प्रेरित पौलुस रोमियों 4:13 में अब्राहम से परमेश्वर के वायदे को संक्षेप में इस प्रकार बताता है:

> अब्राहम और उसके वंश को विश्वास के द्वारा यह प्रतिज्ञा मिली कि वह जगत का वारिस होगा। (रोमियों 4:13)

अब्राहम से उत्तराधिकार में केवल भूमि के एक छोटे से टुकड़े का ही वायदा नहीं किया गया था; उस से संसार का वायदा किया गया था। कनान इस पूर्ण उत्तराधिकार-सम्पूर्ण संसार की केवल एक पहली किश्त थी।

वायदे के देश की मूल सीमाओं के परे परमेश्वर के राज्य का विस्तार पुराने नियम में छोटे स्तर पर विभिन्न समयों पर हुआ। मूसा और उसके बाद के दिनों में, ढाई गोत्रों ने यरदन के पूर्व की भूमि पर अधिकार कर लिया। और विविध राजाओं के शासन के दौरान, इस्राएल की सीमाएँ उत्तर, पूर्व, और दक्षिण की ओर बढ़ी। पुराने नियम इस्राएल के समय में, परमेश्वर के राज्य का केन्द्र कनान देश था, परन्तु उस समय भी परमेश्वर का राज्य सारी पृथ्वी पर फैल रहा था।

पुराने नियम इस्राएल के दिनों में परमेश्वर के राज्य के स्थान को ध्यान में रखते हुए, हमें राज्य के लोगों पर ध्यान देना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

लोग

इस समय के दौरान परमेश्वर के लोगों का इतिहास बहुत जटिल है, इसलिए हमें अपने आप को कुछ ही बातों पर सीमित रखेंगे। लेकिन, फिर भी हम परमेश्वर के राज्य में इस्राएल की भूमिका की बड़ी तस्वीर को देख पायेंगे, और कि यह किस प्रकार मानवता के लिए परमेश्वर के मूल उद्देश्यों के अनुरूप है। हम तीन विषयों को देखेंगे: पहला, राज्य के लिए विशेष लोगों के रूप में इस्राएल का चुनाव; दूसरा, उन लोगों का राज्य के याजकों के रूप में गठन; और तीसरा, राज्य के लोगों की अगुवाई करने के लिए आधिकारिक याजकों और राजाओं का पद। सबसे पहले, आइए हम परमेश्वर के विशेष लोगों के रूप में इस्राएल के चुनाव को देखते हैं।

इस्राएल का चुनाव

हमें याद रखना चाहिए कि प्राचीन इतिहास के दौरान, संसार में पाप के प्रवेश के साथ, परमेश्वर ने उस सम्पूर्ण मानव जाति में से एक परिवार को चुना जिसे संसार में परमेश्वर के विशेष स्वरूपों के रूप में सेवा करनी थी।

हम एकल विशेष परिवार के प्रारूप को पहले उत्पत्ति अध्याय 5 में देखते हैं, जहाँ आदम का पुत्र सेत मानवता के एक धार्मिक वंश का पिता बना। बाद में, परमेश्वर ने सेत के परिवार को उसके वंशज नूह के द्वारा बनाए रखा। आपको याद होगा कि नूह के तीन पुत्र थे: शेम, हाम और येपेत, परन्तु केवल शेम ही परमेश्वर का विशेष रूप से चुना हुआ स्वरूप या पुत्र था। शेम के वंशजों में से, उसकी विशेष भूमिका को निभाने के लिए एक व्यक्ति, अब्राहम को चुना गया। फिर अब्राहम के आश्चर्य के पुत्र इसहाक ने इस चुने हुए वंश को जारी रखा। और फिर इसहाक का पुत्र याकूब, जो इस्राएल भी कहलाता है, परमेश्वर का विशेष रूप से सम्मानित स्वरूप बना। और अन्ततः, याकूब के बारह पुत्र थे, युसुफ और उसके भाई, और ये बारह पुत्र इस्राएल के बारह गोत्रों के पिता बने। ये बारह गोत्र परमेश्वर को बहुत प्रिय थे और उन्हें परमेश्वर के जन का विशेष नाम दिया गया, वे लोग जिन्हें परमेश्वर ने अपने पहिलौठे के समान प्रेम किया। सारी मनुष्य जातियों में से, इस्राएल के गोत्र परमेश्वर के राज्य के विशेष लोग थे।

याजकों का राज्य

दूसरा, जब परमेश्वर ने इस्राएल के गोत्रों को चुना, तो आदम और हव्वा को दी गई मूल याजकीय और शाही भूमिका को पूरा करने के लिए उसने उन्हें याजकों का राज्य बनाया। परमेश्वर ने निर्गमन 19:4-6 में स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि उसके राज्य के निर्माण में इस्राएल को यह अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी थी। जब इस्राएल सीनै पहाड़ के नीचे डेरा डाले हुए था तब वहाँ परमेश्वर ने ये शब्द कहे:

> "तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ। इसलिए अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।" (निर्गमन 19:4-6)

ध्यान दें कि परमेश्वर ने इस्राएल के बारह गोत्रों के बारे में क्या कहा। इस्राएल को एक-याजकों का राज्य... एक पवित्र जाति बनना था। जैसा हम देख चुके हैं, उन्हें पवित्र बनना था, यानि, विशेष, अलग किए गए, अन्य सब लोगों से अलग पहचान रखने वाले लोग। परन्तु अधिक सटीक रूप में, उन्हें याजकों का राज्य, या याजकीय राज्य बनना था।

याजकों के राज्य के रूप में इस्राएल का यह स्थान दिखाता है कि इस्राएल आरम्भ में आदम और हव्वा द्वारा निभाई गई दो-स्तरीय भूमिका को निभाता रहा। आपको याद होगा कि आदम और हव्वा को

परमेश्वर के शाही याजकों के रूप में सेवा करने के लिए बुलाया गया था। यहाँ भी हम देखते हैं कि इस्राएल के गोत्रों को भी परमेश्वर के राजकीय याजक बनने के लिए बुलाया गया था।

याजक और राजा

तीसरा, यद्यपि वृहद् रूप में इस्राएल को परमेश्वर के राज्य के लिए शाही याजक होने का सौभाग्य प्राप्त था, परन्तु हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जब वे बढ़कर एक सामर्थी जाति बने, तो कुछ इस्राएलियों को याजक और राजा का विशिष्ट पद दिया गया था। सामान्य अर्थ में, सम्पूर्ण इस्राएल को परमेश्वर के राज्य के विशेष याजकों के रूप में पवित्र बनाया गया था। परन्तु परमेश्वर ने इस्राएल में से कुछ लोगों और परिवारों को चुना कि वे याजक और राजा के पदों पर सेवा करने के द्वारा उसके विशेष स्वरूप बनें, जो इस्राएल को परमेश्वर की पवित्र सेवा की ओर ले गया।

जैसा निर्गमन की पुस्तक हमें बताती है, हारून और उसके वंशजों को परमेश्वर के याजकों के रूप में उसकी सेवा करनी थी। उन्होंने प्राथमिक रूप से मिलापवाले तम्बू और मन्दिर में आराधना, बलिदान, और स्तुति करते हुए, परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में इस्राएल की अगुवाई की, और बाद में, परमेश्वर के लोगों के राजाओं के रूप में सेवा करने के लिए दाऊद और उसके वंशजों को नियुक्त किया गया। वे देश के राजनैतिक आयामों में परमेश्वर के विशेष सेवकों के रूप में सेवा करते थे।

अब जबकि हम पुराने नियम इस्राएल में राज्य के स्थान और लोगों को देख चुके हैं, तो हमें कुछ पल लेकर उस समय के दौरान राज्य की प्रगति को चित्रित करना चाहिए।

प्रगति

दुःखद रूप से, इस्राएल का इतिहास प्राचीन समय के समान ही है। यह बहुत ही सकारात्मक उपलब्धियों और अथाह असफलताओं का मिश्रण था। परमेश्वर के राज्य ने उन्नति की, परन्तु मनुष्य के पाप के कारण, ये उन्नतियाँ अन्तिम लक्ष्यों से पीछे रह गई; उन्होंने परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक नहीं पहुँचाया।

बाइबल के इतिहास का यह काल लम्बा और जटिल है, इसलिए हम केवल कुछ ही बातों को छू सकते हैं। इस अवधि के दौरान हम राज्य की प्रगति के तीन चरणों के बारे में बात करेंगे: पहला, वायदे का चरण; दूसरा, निर्गमन और विजय; और तीसरा, एक साम्राज्य के रूप में इस्राएल की अवधि।

वायदा

पहला, हम वायदे की अवधि के बारे में बात कर सकते हैं। हम यहाँ इस्राएल के पुरखों के समय के बारे में बात कर रहे हैं। अब्राहम, इसहाक, याकूब और इस्राएल के गोत्रों के बारह प्रधानों के दिनों में, परमेश्वर ने इस्राएल के भविष्य के बारे में बहुत से वायदे किए। मुख्यत:, इन वायदों की दो श्रेणियाँ हैं: पहली, वृद्धि की प्रतिज्ञा; और दूसरी, अधिकार की प्रतिज्ञा।

जिस प्रकार परमेश्वर ने आदम और हव्वा को परमेश्वर के स्वरूपों की वृद्धि करने के लिए बुलाया, उसी प्रकार परमेश्वर ने अब्राहम से वायदा किया कि उसका वंश गिनती में अत्यधिक बढ़ जाएगा। उत्पत्ति 15:5 में अब्राहम को दिए परमेश्वर के महान वायदे को देखें:

> "आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है?" फिर उसने उससे कहा, "तेरा वंश ऐसा ही होगा।" (उत्पत्ति 15:5)

जैसा हम देख चुके हैं, अब्राहम और उसके वंशजों को चुना गया था कि वे परमेश्वर के स्वरूप में अपनी भूमिकाओं को निभाने में मनुष्यों की अगुवाई करें। यह आंशिक रूप में, एक पवित्र बीज की वृद्धि

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

के द्वारा होना था, जिस से छुटकारा पाए हुए मनुष्य तारों के समान अनगिनत हो जाएँ। इसी कारण सारा के द्वारा उत्पन्न हुए अब्राहम के आश्चर्य के पुत्र, इसहाक के जन्म पर इतना अधिक बल दिया गया है। इसी कारण बाइबल की कहानी भी इसहाक के पुत्र याकूब और याकूब के बारह पुत्रों पर इतना अधिक ध्यान देती है। पुराने नियम में परमेश्वर के लोग पहले से ही, वायदे की इस आरम्भिक अवधि में ही वृद्धि कर रहे थे। और इसी कारण सम्पूर्ण पुराने नियम में इस्राएल में छुटकारा पाए हुए परमेश्वर के स्वरूपों की वृद्धि केन्द्रिय विषय है।

इससे बढ़कर, पुरखों के बारे में बाइबल की कहानियाँ अधिकार के वायदे पर भी ध्यान केन्द्रित करती हैं। परमेश्वर ने अब्राहम से न केवल बहुत से वंशजों का वायदा किया, बल्कि यह भी कि उसके वंशज कनान की पवित्र भूमि पर अधिकार करेंगे। जैसा हम उत्पत्ति 15:7 में पढ़ते हैं:

> तब (परमेश्वर) ने उससे कहा, "मैं वही यहोवा हूँ जो तुझे कसदियों के ऊर नगर से बाहर ले आया, कि तुझ को इस देश का अधिकार दूँ।" (उत्पत्ति 15:7)

जिस प्रकार परमेश्वर ने आदम और हव्वा को पृथ्वी पर अधिकार करने का निर्देश दिया था, उसी प्रकार उसने वायदा किया कि उसके विशेष जन इस्राएल वायदे के देश में अधिकार करेंगे और समृद्धि प्राप्त करेंगे।

इसी कारण अब्राहम ने अपने घराने के लिए दफनाने के स्थान के रूप में कनान में प्रतीकात्मक रूप से भूमि के एक छोटे टुकड़े को खरीदा। आगे, यह बताता है कि क्यों याकूब ने कुछ समय के लिए वायदे के देश को छोड़ा, परन्तु अत्यधिक खतरे के समय में वापस लौटा। और यह बताता है कि क्यों, मृत्यु के समय, युसुफ से इस्राएलियों को दिलासा दी कि वे मिस्र को छोड़कर वायदे के देश में लौटेंगे। पुरखों का काल वह समय था जब परमेश्वर ने वायदा किया कि वह पुराने नियम इस्राएल को बढ़ाएगा और अधिकार देगा जो उसके राज्य को आगे बढ़ाएँगे।

निर्गमन और विजय

पुराने नियम इस्राएल के इतिहास में परमेश्वर के राज्य के पृथ्वी पर आगमन का दूसरा बड़ा चरण निर्गमन और विजय का काल है। एक पद्यांश विशेष रूप में इसे स्पष्ट करता है कि इस समय के दौरान इस्राएल के साथ परमेश्वर का कार्य पृथ्वी पर उसका राज्य स्थापित करने के लिए था। विशेषत:, जब मूसा और इस्राएली लाल समुद्र से गुजरे, उन्होंने एक प्रसिद्ध गीत गाया जो निर्गमन 15:1-18 में आता है। यह पवित्र वचन में पहला पद्यांश है जिस में परमेश्वर के राज्य के विषय को स्पष्ट रूप से बताया गया है। इस गीत में राज्य के बहुत से अद्भुत विषय हैं परन्तु हम केवल एक का वर्णन करेंगे। निर्गमन 15:13 में हम भविष्य के बारे में मूसा के आत्मविश्वास को इन शब्दों में पढ़ते हैं:

> "अपनी करूणा से तू ने अपनी छुड़ाई हुई प्रजा की अगुवाई की है, अपने बल से तू उसे अपने पवित्र निवासस्थान को ले चला है।" (निर्गमन 15:13)

ध्यान दें कि इस्राएलियों ने परमेश्वर की स्तुति इसलिए की क्योंकि वह अपने पवित्र निवासस्थान की ओर उनकी अगुवाई कर रहा था। जैसा हमने देखा, अदन के समान, वायदे का देश पृथ्वी पर परमेश्वर की विशेष पवित्र उपस्थिति का केन्द्र बनने वाला था। परन्तु इससे अधिक, हमें ध्यान देना चाहिए कि अनुवादित शब्द-अगुवाई करना, इब्रानी में नाहाल, का शाब्दिक अनुवाद-चरवाहा हो सकता है। चरवाही करना सामान्य रूप से प्राचीन पूर्व में, और बाइबल में भी राजाओं की गतिविधियों का सामान्य वर्णन है। परमेश्वर चरवाही करने वाले राजा के रूप में अपने लोगों को अपने पवित्र निवासस्थान की ओर ले जा रहा था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर के राजा होने और राज्य का विषय लाल समुद्र के अन्त के गीत में निर्गमन 15:17 और 18 में भी आता है:

> "तू उन्हें पहुँचाकर अपने निज भाग वाले पहाड़ पर बसाएगा, यह वही स्थान है, हे यहोवा, जिसे तू ने अपने निवास के लिए बनाया, और वही पवित्रस्थान है जिसे, हे प्रभु, तू ने आप ही स्थिर किया है। यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा।" **(निर्गमन 15:17-18)**

इन पदों के अनुसार, परमेश्वर इस्राएल को एक पवित्र पहाड़, पवित्रस्थान की ओर ले जा रहा था जिसे बाइबल बाद में यरूशलेम के रूप में प्रकट करती है। और उस पहाड़ी पवित्रस्थान की प्रकृति कैसी थी? पहला, मूसा ने कहा यह परमेश्वर का निवासस्थान होगा। एक बार फिर, अनुवादित शब्द निवासस्थान, इब्रानी में याशव, का अक्सर तात्पर्य होता है-एक राजा का राज्याभिषेक। इस पद्यांश के शाही अभिप्रायों के प्रकाश में, यह समझना सर्वोत्तम है कि पर्वतीय पवित्रस्थान परमेश्वर के राज्याभिषेक का स्थान होगा।

इसी कारण पद 18 तुरन्त ही स्पष्ट शाही शब्दावली में परमेश्वर की स्तुति इन शब्दों में करता है:

> "यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता रहेगा।" **(निर्गमन 15:18)**

जब परमेश्वर ने इस्राएल के राजा के रूप में वायदे के देश की ओर उनकी चरवाही की, उसने उन्हें उन लोगों के रूप में स्थापित करने की इच्छा की जो उसके शाही सिंहासन के चारों ओर रहेंगे। अन्य शब्दों में, निर्गमन और विजय का उद्देश्य परमेश्वर के शासन, पृथ्वी पर उसके राज्य को सदा सर्वदा के लिए स्थापित करना था।

साम्राज्य

पुराने नियम इस्राएल के महत्व की अवधि के दौरान परमेश्वर के राज्य के तीसरे चरण को साम्राज्य के चरण के रूप में बताया जा सकता है, वह समय जब इस्राएल राजा और मन्दिर के साथ एक स्थापित राष्ट्र बन गया। दुर्भाग्यवश, इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजना में मानवीय राजाओं का स्थान विवाद का विषय है। बाद के अध्याय में हम सावधानी से इस तथ्य को देखेंगे कि परमेश्वर ने सर्वदा चाहा था कि इस्राएल में एक राजा हो, और राजतन्त्र इस्राएल में कैसे विकसित हो। परन्तु इस समय हम केवल यह देखेंगे कि परमेश्वर द्वारा दाऊद और उसके पुत्रों को अपने लोगों के ऊपर राजा ठहराने का निर्णय करने के बाद किस प्रकार परमेश्वर का राज्य आगे बढ़ा।

दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान ने यरूशलेम को राजा और मन्दिर के स्थान के रूप में स्थापित करके पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाया। एक तरफ, यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन की स्थापना शाही परिवार की स्थापना थी जो पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाला था। देखें 1 इतिहास 29:23 में दाऊद के घराने के सिंहासन का वर्णन किस प्रकार किया गया है:

> सुलैमान अपने पिता दाऊद के स्थान पर राजा होकर यहोवा के सिंहासन पर विराजने लगा। **(1 इतिहास 29:23)**

दाऊद का सिंहासन यहोवा का सिंहासन था। दाऊद के शाही घराने ने परमेश्वर के शाही अधिकार का प्रतिनिधित्व करते हुए इस्राएल के लोगों की अगुवाई की; दाऊद और उसके पुत्रों की परमेश्वर के महिमा प्राप्त स्वरूपों द्वारा परमेश्वर के अन्य स्वरूपों की अगुवाई करने की उच्च आधिकारिक भूमिका थी।

दूसरी तरफ, दाऊद ने परमेश्वर के लिए मन्दिर की तैयारी की और सुलैमान ने उसे बनाया, जिसे बाइबल सामान्यत: परमेश्वर का भवन या परमेश्वर का महल कहती है। इस मन्दिर में परमेश्वर की

आराधनापूर्ण सेवा में याजकों के समाज, इस्राएल की अगुवाई करने के लिए याजकों को नियुक्त किया गया। अब, सुलैमान ने मन्दिर के केन्द्र में वाचा के सन्दूक को रखा, जिसे दाऊद यरूशलेम में लाया था। वाचा के सन्दूक का प्रतीक अत्यधिक महत्वपूर्ण है। दाऊद के अनुसार, वाचा का सन्दूक परमेश्वर के चरणों की पीढ़ी था। देखें 1 इतिहास 28:2 में वह क्या कहता है:

> "मेरी इच्छा तो थी कि यहोवा की वाचा के सन्दूक के लिए, और हम लोगों के परमेश्वर के चरणों की पीढ़ी के लिए विश्राम का एक भवन बनाऊँ, और मैं ने उसके बनाने की तैयारी की थी।" (1 इतिहास 28:2)

परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग में था, परन्तु उसके सिंहासन की पीढ़ी यरूशलेम के मन्दिर में वाचा का सन्दूक था। सुलैमान ने यरूशलेम को दाऊद के घराने के लिए राजधानी, और स्वयं परमेश्वर के लिए एक शाही पवित्रस्थान बना दिया।

अत: हम देखते हैं कि दाऊद और सुलैमान के समय तक, इस्राएल अब्राहम के समय के प्रवासी गोत्र से निर्गमन और विजय द्वारा स्थापित एक राष्ट्र में, और अन्तत: राजकीय नगर यरूशलेम में राजा और मन्दिर के साथ एक साम्राज्य में बदल गया था। परमेश्वर का राज्य इस्राएल के देश में स्थापित हो रहा था।

अब इस्राएल का एक साम्राज्य के रूप में निर्माण करने की आशा, और उद्देश्य क्या था? एक शब्द में, परमेश्वर ने इन चरणों में अपने लोगों की अगुवाई की ताकि इस्राएल के मानवीय राजा के द्वारा, जो परमेश्वर का विशेष सेवक-राजा था, परमेश्वर का राज्य पृथ्वी की छोर तक फैले। देखें भजनकार भजन 72:1-17 में किस प्रकार इस नियति के बारे में बताता है:

> हे परमेश्वर राजा को अपना नियम बता, राजपुत्र को अपना धर्म सिखला... वह समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा... सब राजा उसको दण्डवत् करेंगे, जाति जाति के लोग उसके अधीन हो जाएँगे... उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा; जब तक सूर्य बना रहेगा, तब तक उसका नाम नित्य नया होता रहेगा, और लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे, सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी। (भजन 72:1, 8, 11, 17)

यहाँ हम कई महत्वपूर्ण विषयों को देख सकते हैं। पहला, भजनकार ने दाऊद के घराने पर आशीष के लिए प्रार्थना की, कि न्याय और धार्मिकता दाऊद के राज्य का मूल होगी। परन्तु वह जानता था कि इसके परिणामस्वरूप दाऊद का राज्य बहुत बढ़ जाएगा। दाऊद का घराना सारी पृथ्वी पर राज्य करेगा। वह समुद्र से समुद्र तक राज्य करेगा, और सारे राजा और सारी जातियाँ दाऊद के सिंहासन पर बैठनेवाले की सेवा करेंगे जो परमेश्वर के न्याय और धार्मिकता का प्रतिनिधित्व करता था। परमेश्वर के विशेष सेवक, इस्राएल के राजा का राज्य, परमेश्वर के राज्य का पृथ्वी की सारी जातियों में विस्तार करेगा।

परन्तु परमेश्वर के राज्य का यह विस्तार क्यों होगा? लक्ष्य क्या था? एक अद्‌भुत रीति से, भजन 72 घोषणा करता है इस्राएल के इतिहास के शाही चरण का उद्देश्य उस मूल उद्देश्य को पूरा करना था जिसके लिए परमेश्वर ने इस्राएल को चुना था। आपको याद होगा कि उत्पत्ति 12:3 में परमेश्वर के मन में एक लक्ष्य था जब उसने अब्राहम को अपनी ओर बुलाया। वह था:

> पृथ्वी की सारी जातियाँ ... (अब्राहम) के द्वारा आशीष पाएँ। (उत्पत्ति 12:3)

परन्तु अब्राहम से किया गया यह वायदा किस प्रकार पूरा होने वाला था? पुन: भजन 72 पद 17 को देखें। वहाँ हम पढ़ते हैं कि दाऊद के घराने के न्यायपूर्ण और धार्मिक राज्य के द्वारा:

> लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे, सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी। (भजन 72:17)

उत्पत्ति 12:3 का संकेत स्पष्ट है। अब्राहम को चुनने में परमेश्वर का मूल लक्ष्य तब पूर्ण होगा जब दाऊद का घराना परमेश्वर की आशीषों को सारी जातियों में फैलाएगा।

और अन्तत:, हमें पूछना चाहिए, दाऊद के साम्राज्य में इस्राएल के मूल उद्देश्य की पूर्णता का परिणाम क्या था? दाऊद के घराने को अब्राहम की आशीषों को संसार में क्यों फैलाना था? एक शब्द में, परिणाम परमेश्वर के महिमामय राज्य को संसार की छोर तक फैलाना होगा। इसी कारण भजन 72 पद 19 में परमेश्वर की स्तुति के साथ समाप्त होता है:

> (परमेश्वर का) महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य रहेगा; और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण होगी। आमीन फिर आमीन। (भजन 72:19)

भजन 72 का यह अन्तिम पद इस्राएल में पुरखों के वायदों से लेकर निर्गमन और विजय, तथा साम्राज्य तक होने वाले सारे विकास के अन्तिम लक्ष्य को प्रकट करता है। राज्य के ये चरण सारी पृथ्वी को परमेश्वर की महिमा से परिपूर्ण करने के लिए थे। जिस प्रकार परमेश्वर का राज्य दाऊद के घराने के शासन के द्वारा इस्राएल की सीमाओं से पृथ्वी की छोर तक फैला, वैसे ही परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति सम्पूर्ण संसार में उसी प्रकार फैल जाएगी जैसी यह स्वर्ग में है।

अब जबकि हमने प्राचीन इतिहास के दौरान परमेश्वर के राज्य की पृष्ठभूमि और पुराने नियम इस्राएल के इतिहास को देख लिया है, तो हमें अपने अन्तिम शीर्षक पर आना चाहिए: नये नियम में परमेश्वर का राज्य। यदि हमें पुराने नियम को अपने समय में उचित रूप से लागू करना है तो मसीह के अनुयायियों के रूप में परमेश्वर के राज्य के बारे में नये नियम के दृष्टिकोणों को समझना होगा।

नया नियम

यदि मसीही किसी एक बात पर सहमत हैं, तो वह यह है कि यीशु के सन्देश का हृदय, सम्पूर्ण नये नियम का हृदय, सुसमाचार है। परन्तु अक्सर हम यह नहीं पहचानते हैं कि नए नियम का सुसमाचार, या मसीह का सुसमाचार, पुराने नियम के परमेश्वर के राज्य के विषय का ही फल है। देखें मत्ती किस प्रकार मत्ती 4:23 में यीशु के प्रचार को संक्षेप में बताता है:

> यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनके आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता रहा। (मत्ती 4:23)

यीशु ने सुसमाचार का प्रचार किया। परन्तु वह सुसमाचार क्या था? वह परमेश्वर के राज्य का सन्देश था। और इस कारण, सुसमाचार की हमारी समझ जिस पर हम विश्वास करते हैं और दूसरों के साथ बाँटते हैं, नये नियम का हृदय, प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के राज्य की हमारी समझ पर निर्भर है।

नये नियम में परमेश्वर के राज्य के विषय को हम तीन प्रकार से देखेंगे जिस प्रकार हमने बाइबल के इतिहास के अन्य चरणों को देखा है। सबसे पहले हम देखेंगे कि नया नियम परमेश्वर के राज्य के स्थान के बारे में क्या कहता है; दूसरा, हम राज्य के लोगों के बारे में बात करेंगे; और तीसरा, हम नये नियम के समय में राज्य की प्रगति को देखेंगे। आइए सबसे पहले हम नये नियम में राज्य के स्थान को देखते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

स्थान

परमेश्वर के राज्य के स्थान के बारे में नये नियम की भी वही स्थिति है जो हम पुराने नियम में पाते हैं। पहला, यह संकेत देता है कि परमेश्वर के राज्य का केन्द्र इस्राएल था, और दूसरा यह सिखाता है कि परमेश्वर का राज्य सारी पृथ्वी पर फैलना था। आइए पहले हम नये नियम के दिनों में इस्राएल में राज्य के स्थान को देखते हैं।

केन्द्र

अब हमें इस बात से चकित नहीं होना चाहिए कि नये नियम में परमेश्वर का राज्य इस्राएल में केन्द्रित है। यही वह प्रारूप है जिसके दोहराने को हम कई बार पुराने नियम में देखते हैं। आरम्भ में पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का केन्द्र अदन में था। फिर, इस्राएल मूसा के नेतृत्व में परमेश्वर के राज्य को बनाने के लिए अदन के निकट आया। अत:, जब परमेश्वर के राज्य का नये नियम का चरण शुरू हुआ, तो राज्य एक बार फिर इस्राएल के देश में शुरू हुआ।

यह देखना वास्तव में कठिन नहीं है कि इस्राएल का देश नये नियम में परमेश्वर के राज्य का भौगोलिक केन्द्र है। जैसा हम सब जानते हैं, इस्राएल वहाँ है जहाँ यीशु का जन्म हुआ, जहाँ वह बढ़ा, अपने प्रेरितों को एकत्रित किया, सेवा की, मरा, जी उठा, और स्वर्ग पर उठा लिया गया। बचपन में मिस्र में बिताए थोड़े समय के अतिरिक्त, यीशु ने अपना सम्पूर्ण जीवन वायदे के देश में बिताया।

अब इस बात को समझने के लिए कि नये नियम में भी परमेश्वर के राज्य का केन्द्र वायदे का देश ही क्यों है, इस समय परमेश्वर के लोगों की दशा को याद करना सहायक है। पुराने नियम में परमेश्वर ने इस्राएल को आशीष दी थी। वह उन्हें पुरखों के समय के अर्द्ध-खानाबदोश अस्तित्व से, मूसा और यहोशू की अगुवाई में राष्ट्र बनने, और फिर दाऊद और सुलैमान के नेतृत्व में शाही महिमा तक लाया था जिसकी अपनी एक राजधानी, महल और मन्दिर था। ये पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की महान सफलताएँ थीं। परन्तु जैसा पुराना नियम हमें बताता है, इन आशीष के समयों में इस्राएलियों ने परमेश्वर के विरूद्ध इतना अधिक विद्रोह किया कि परमेश्वर ने अपने लोगों को पवित्र भूमि से निष्कासित कर दिया। यीशु के समय तक, इस्राएल के लोग निष्कासन में थे, तितर-बितर थे, और सैंकड़ों वर्षों से पाँच अन्यजाति साम्राज्यों: अश्शूरियों, कसदियों, मादी और फारसियों, यूनानियों, और रोमियों की तानाशाही को झेल रहे थे।

यद्यपि बहुत से आधुनिक मसीही इसे नहीं पहचानते हैं, लेकिन यीशु पृथ्वी पर इस निष्कासन को समाप्त करने के लिए आया था। वह परमेश्वर के लोगों में से बचे हुए धर्मियों को बुलाने और परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने के लिए आया था। देखें यीशु के आरम्भिक सन्देशों में से एक के बारे में लूका ने लूका 4:17-19 में क्या लिखा है:

> यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उसने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहाँ यह लिखा था: "प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ, और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ।" (लूका 4:17-19)

नासरत के आराधनालय में, यीशु ने यशायाह अध्याय 61 से एक भविष्यद्वाणी को पढ़ा जिसका वायदा था कि बन्धुवे एक दिन वायदे के देश में लौट आएँगे। अब यशायाह की भविष्यद्वाणी बताती है-कंगाल, -बन्दी, -अन्धे, -कुचले हुए -वे शब्द जिनके द्वारा यशायाह अध्याय 61 इस्राएली बन्धुवों का वर्णन करता है। परन्तु ध्यान दें यह भविष्यद्वाणी क्या कहती है-कोई -सुसमाचार, -आजादी, -दृष्टि पाने और -

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

छुटकारे का प्रचार करेगा। सुसमाचार का प्रचार उन लोगों को किया जाना था जो अन्यजाति के देशों की तानाशाही से पीड़ित थे। और किसने इस सुसमाचार को पूरा किया? यीशु ने। जैसे लूका ने लूका 4:20 और 21 में लिखा है:

> तब (यीशु ने) पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी और बैठ गया; और आराधनालय के सब लोगों की आँखें उस पर लगी थीं। तब वह उनसे कहने लगा, "आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है। (लूका 4:20-21)

यह यीशु ही था जिसे परमेश्वर ने इस्राएलियों के समक्ष इस सुसमाचार की घोषणा करने के लिए अभिषेक किया था कि उनकी बन्धुवाई समाप्त होने वाली थी।

विस्तार

अब जितना महत्वपूर्ण यह देखना है कि नये नियम में परमेश्वर का राज्य वायदे के देश पर केन्द्रित है, उतना ही महत्वपूर्ण इसे देखना भी है कि नया नियम परमेश्वर के राज्य के सम्पूर्ण संसार में विस्तार पर बल देता है। वास्तव में, नया नियम सिखाता है कि एक दिन वैश्विक विस्तार की आशा मसीह में पूर्ण होगी। इतिहास के प्रत्येक पूर्व के चरण के समान ही, नये नियम में भी परमेश्वर ने अपने राज्य का वायदे के देश से सम्पूर्ण पृथ्वी में विस्तार करने की योजना बनाई।

हम यह पहले ही देख चुके हैं कि यीशु ने प्रभु की प्रार्थना में अपने चेलों को इस वैश्विक राज्य के लिए प्रार्थना करना सिखाया। मत्ती 6:10 में यीशु ने हमें प्रार्थना करना सिखाया:

> "तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।" (मत्ती 6:10)

यीशु ने इस विषय को अपनी सेवकाई के दौरान जारी रखा। वास्तव में, उसने अपने चेलों की नजरों को इस वैश्विक लक्ष्य पर केन्द्रित रखा। जैसा हम मत्ती 24:14 में पढ़ते हैं यीशु ने अपने चेलों से कहा:

> "और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।" (मत्ती 24:14)

परमेश्वर के राज्य के आगमन के सुसमाचार के सन्देश को सारे संसार में फैलाना था और तब यीशु आ जाएगा।

नये नियम में राज्य के स्थान को ध्यान में रखते हुए, अब हमें अपने ध्यान को नये नियम में राज्य के लोगों पर केन्द्रित करना चाहिए।

लोग

जैसा हमने देखा, आरम्भ में परमेश्वर ने नियुक्त किया कि उसका वैश्विक राज्य स्वर्ग में उसके राज्य का प्रतिबिम्ब होगा। यह उसके स्वरूप, मानव जाति के कार्य के द्वारा होना था। परन्तु पाप के आगमन के साथ, मनुष्य अपनी भूमिका को पूरा नहीं कर पाया। इसलिए, परमेश्वर ने विशेष लोगों को चुना और उन्हें पाप से छुड़ाया ताकि वे उसके कार्य को जारी रख सकें। ये विशेष लोग अन्ततः इस्राएल देश बन गए। और पुराने नियम के इतिहास के आगे बढ़ने के साथ, परमेश्वर ने अपने छुड़ाए हुए देश की उनके राज्य के कार्यों में अगुवाई करने के लिए, इस्राएल के अन्दर विशेष लोगों, याजकों और राजाओं को खड़ा किया। यही मुद्दे नये नियम में भी प्रकट होते हैं। नया नियम इन बातों के बारे में जिस प्रकार बात करता है उसे

समझने के लिए, हम दो विषयों को देखेंगे: पहला, मसीह परमेश्वर के प्राथमिक स्वरूप के रूप में; और दूसरा, मसीह में विश्वासी परमेश्वर के छुड़ाए हुए स्वरूपों के रूप में। आइए पहले हम परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मसीह को दिए गए प्रमुख स्थान को देखते हैं।

मसीह

यह दुःखद परन्तु सत्य है, कि आज सुसमाचारीय मसीहियों को इसके बारे में बहुत कम जानकारी है कि त्रिएकता का दूसरे व्यक्ति, अनन्त वचन ने, देहधारण क्यों किया। हम सही पुष्टि करते हैं कि यीशु परमेश्वर है, और हम क्रूस पर उसकी स्थानापन्न मृत्यु और मृतकों में से पुनरूत्थान के बारे में बहुत बात करते हैं। परन्तु आधुनिक मसीही विरले ही इस बात को समझते हैं कि इन बातों को करने के लिए यीशु को मनुष्य क्यों बनना पड़ा। परमेश्वर के राज्य में मनुष्य की भूमिका और जिस प्रकार यीशु ने उस भूमिका को पूरा किया वह इस बात को समझने का सर्वोत्तम तरीका है कि परमेश्वर हमारे समान क्यों बना। इस भूमिका के दो आयाम हमारे ध्यान के विशेष योग्य हैं: पहला, यह तथ्य कि यीशु अन्तिम आदम है; और दूसरा, यह तथ्य कि यीशु हमारा याजक और राजा है।

हम सब इस तथ्य से परिचित हैं कि प्रेरित पौलुस ने आदम और मसीह के बीच एक समकक्षता, एक साम्य देखा। उसने अपनी पत्रियों में कई बार इस संबंध का वर्णन किया। एक शब्द में, मसीह ने आदम द्वारा लाए गए शाप को पलट दिया। आदम के पाप ने मानवता को दोषी ठहराया, जबकि यीशु के आज्ञापालन ने परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मानवता की भूमिका को पूर्ण किया। संभवत: पौलुस के दृष्टिकोण की सर्वाधिक सारगर्भित अभिव्यक्ति 1 कुरिन्थियों 15:21 और 22 में पाई जाती है। वहाँ उसने इन शब्दों को लिखा:

> क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरूत्थान भी आया। और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे। **(1 कुरिन्थियों 15:21-22)**

ध्यान दें कि ये शब्द उनके कितना विपरीत हैं जिनकी हम अपेक्षा कर सकते हैं। हमने पौलुस से कुछ इस प्रकार कहने की अपेक्षा की होगी, मृत्यु मनुष्य के द्वारा आई, परन्तु मृतकों का पुनरूत्थान परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा आता है। अब, जहाँ तक संभव है, यह सत्य होता, परन्तु पौलुस यहाँ इस बात पर बल नहीं देता है।

इसके विपरीत, उसने कहा कि चूंकि मनुष्य की मृत्यु मनुष्य, यानि आदम के द्वारा आई, इसलिए मनुष्य का मृतकों में से अनन्त जीवन के लिए पुनरूत्थान भी मनुष्य ही के द्वारा, यानि मसीह के द्वारा आना था। आदम परमेश्वर का अविश्वासयोग्य स्वरूप था, और इसलिए वह हमारे लिए मृत्यु लाया; परन्तु मसीह परमेश्वर का सिद्ध विश्वासयोग्य स्वरूप था, और इसलिए वह हमारे लिए पुनरूत्थान का जीवन लाया।

मसीह आदम के पाप के शाप के अधीन उन सब लोगों के लिए स्थानापन्न के रूप में मरा जो उस पर विश्वास करेंगे, और इसीलिए अपनी धार्मिकता के लिए उसने परमेश्वर से प्रतिफल पाया-और इस प्रतिफल में मृत्यु के ऊपर जय और सम्पूर्ण सृष्टि पर अधिकार दोनों शामिल थे। यह एक कारण है कि नया नियम मसीह की मानवता पर इतना अधिक ध्यान केन्द्रित करता है। वह अन्तिम आदम है, वह मनुष्य जिसने वह सब किया जिसे आदि से मानव जाति को करना था। उसके प्रयासों से परमेश्वर के राज्य के उद्देश्य पूर्ण होंगे।

अब परमेश्वर का सिद्ध स्वरूप होने के अतिरिक्त, मसीह याजक और राजा के पदों को भी पूर्ण करता है। आपको याद होगा कि आदम और हव्वा परमेश्वर के शाही याजकों के रूप में सेवा करते थे, और परमेश्वर ने इस्राएल को याजकों का राज्य बनने के लिए बुलाया, और यह भी कि इस्राएल के राज्य की अगुवाई अधिकारियों द्वारा की जाती थी: राजा, और महायाजक की अगुवाई में अधिकृत याजक।

अत:, हमें इस बात से बिल्कुल भी चकित नहीं होना चाहिए कि नया नियम मसीह को हमारे महायाजक और राजा के रूप में चित्रित करता है। उदाहरण के लिए, इब्रानियों का लेखक बार-बार मसीह की याजकीय भूमिका पर बल देता है। जैसा उसने इब्रानियों 4:14 में लिखा:

> हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु। (इब्रानियों 4:14)

इसके अतिरिक्त, सम्पूर्ण नये नियम में मसीह को दाऊद का पुत्र कहा गया है जिसने दाऊद के शाही पद को पूरा किया। वास्तव में, जब मरियम से मसीह के जन्म की घोषणा की गई, तो स्वर्गदूत ने लूका 1:32 और 33 में उसके बारे में ये शब्द कहे:

> "वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा, और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।" (लूका 1:32-33)

मसीह राजा के कार्य को सिद्धता से करता है, इसलिए उसके नेतृत्व में परमेश्वर के राज्य का कभी अन्त न होगा। याजक और राजा के रूप में मसीह के नेतृत्व के द्वारा, परमेश्वर का राज्य वास्तव में पृथ्वी पर वैसे ही आएगा जैसे वह स्वर्ग में है।

यद्यपि नये नियम के समय में मसीह निस्सन्देह परमेश्वर के राज्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति है, परन्तु हम गलत होंगे यदि हमने उसमें यह नहीं जोड़ा कि उसके अनुयायी भी राज्य का भाग हैं।

विश्वासी

अब, नये नियम की शुरूआत में, यहूदी लोगों, अब्राहम के शारीरिक वंशजों की, राज्य में विशेष भूमिका थी। न केवल यीशु और उसके प्रेरित, बल्कि पिन्तेकुस्त के दिन एकत्रित सम्पूर्ण कलीसिया के लोग भी यहूदी थे। उस दिन, परमेश्वर ने इस्राएलियों में से एक विश्वासयोग्य भाग को सारे संसार में से चुना कि वे सुसमाचार को सुनें और उस पर विश्वास करें।

इसके बाद, परमेश्वर का राज्य जल्द ही इस्राएल की सीमाओं के पार रोमी साम्राज्य के सुदूर क्षेत्रों तक बढ़ गया। यद्यपि दूसरे देशों में से परिवर्तित बहुत से लोग अन्यजाति थे, परन्तु नया नियम सिखाता है कि मसीह का अनुगमन करने वाला प्रत्येक व्यक्ति, चाहे यहूदी हो या अन्यजाति, परमेश्वर के लोगों के बीच गिना जाता है और उसे परमेश्वर के राज्य के निर्माण का कार्य दिया जाता है। इसी कारण नया नियम मसीह के अनुयायियों को परमेश्वर के नवीनीकृत स्वरूप कहता है। जैसा पौलुस ने इफिसियों 4:24 में कहा है:

> हमें नये मनुष्यत्व को पहनने के लिए परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है। (इफिसियों 4:24)

और इसी कारण पतरस ने नये नियम की कलीसिया का, जिसमें यहूदी और अन्यजाति दोनों शामिल हैं, का वर्णन पुराने नियम इस्राएल की भूमिका के अर्थ में किया। 1 पतरस 2:9 में उसने इन शब्दों को लिखा:

> पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो। (1 पतरस 2:9)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यहाँ पतरस ने निर्गमन 19:6 की ओर संकेत किया जहाँ इस्राएल को याजकों का राज्य कहा गया था। इस संकेत के द्वारा, वह स्पष्ट करता है कि पृथ्वी की हर जाति में से मसीहियों को पुराने नियम इस्राएल के लक्ष्य-पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की स्थापना और विस्तार में सहभागी होने के लिए बुलाया गया है। जब हम मसीह के पीछे चलते हैं और उसके आत्मा के सामर्थ में जीते हैं, हम सब परमेश्वर के राज्य में विशेष, चुने हुए औजार हैं।

अब जबकि हमने नये नियम के समय में राज्य के स्थान और लोगों दोनों को देख लिया है, तो हमें अपने अन्तिम बिन्दू पर आना चाहिए: नये नियम में राज्य की प्रगति।

प्रगति

कई प्रकार से, नये नियम में परमेश्वर के राज्य की प्रगति सबसे आधारभूत विचारों में से एक है जिसे हम पवित्र वचन में पाते हैं। जैसा हम बाद के अध्यायों मे देखेंगे, जब हम पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को पढ़ते हैं, तो इस विचार को पाना आसान है कि मसीह के पृथ्वी पर आने से, परमेश्वर का राज्य तीव्रता से आ जाएगा। बुराई का अचानक पृथ्वी पर से उन्मूलन हो जाएगा, पृथ्वी परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति से भर जाएगी, और परमेश्वर के अनगिनत लोग पृथ्वी में भरकर सर्वदा उसकी सेवा और आराधना करते रहेंगे। वास्तव में, यीशु के समय में अधिकाँश लोगों की यही अपेक्षा थी। परन्तु यीशु ने इस अपेक्षा को इतनी दृढ़ता से चुनौती दी कि इस्राएल में अधिकाँश लोगों ने मसीह के रूप में उसके पीछे चलने की बजाय उसका तिरस्कार किया।

नये नियम में राज्य की प्रगति को साराँश में बताने का एक सबसे अच्छा मार्ग यीशु का राई के दाने का दृष्टान्त है। देखें यीशु ने मत्ती 13:31 और 32 में परमेश्वर के राज्य के बारे में क्या कहा:

> "स्वर्ग का राज्य राई के दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया। वह सब बीजों से छोटा तो होता है पर जब बढ़ जाता है तब सब साग-पात से बड़ा होता है; और पेड़ बन जाता है।" (मत्ती 13:31-32)

इस लघु दृष्टान्त में, यीशु ने समझाया कि अचानक विपत्ति के समान आने की बजाय, परमेश्वर के राज्य की शुरूआत राई के दाने के समान छोटी होगी; परन्तु बाद में यह बड़े पेड़ के समान बढ़ जाएगा, संसार में अब तक ज्ञात सबसे बड़ा राज्य बन जाएगा।

जैसा शेष नया नियम हमें बताता है, राज्य के नये नियम की अवस्था की शुरूआत यीशु की पृथ्वी की सेवकाई के साथ तुलनात्मक रूप में छोटे और शान्त रूप में हुई। परन्तु अन्त में, जब मसीह लौटेगा, उसका राज्य सारी पृथ्वी पर फैल जाएगा। अध्यायों की इस श्रृंखला में, हम बारम्बार नये नियम में तीन मुख्य चरणों में परमेश्वर के राज्य की प्रगति के बारे में बात करेंगे।

उदघाटन

पहले, हम मसीह और उसके प्रेरितों की सेवकाई में राज्य के आरम्भ या उदघाटन के बारे में बात करेंगे। दो हजार से अधिक वर्षों पूर्व, यीशु और उसके प्रेरितों ने पृथ्वी पर परमेश्वर के महिमामय राज्य का उदघाटन किया। इसी कारण इफिसियों 2:20 में प्रेरित पौलुस कलीसिया के बारे में कहता है:

> और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो। (इफिसियों 2:20)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

निरन्तरता

दूसरा, हम राज्य की निरन्तरता के बारे में बात करेंगे, जिसमें मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच का सम्पूर्ण कलीसियाई इतिहास शामिल है-यह वह समय है जिसमें आप और मैं रहते हैं। इसी समय में हमें परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के द्वारा परमेश्वर के राज्य को लाने को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए, जैसा यीशु ने मत्ती 6:33 में कहा:

> "पहले परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करो।" (मत्ती 6:33)

हमारे जीवन के हर दिन हमें सुसमाचार को फैलाना है, कलीसिया का निर्माण करना है, और मसीह के राज्य की खातिर संसार भर की संस्कृतियों को रूपान्तरित करना है।

पूर्णता

तीसरा, हम राज्य की पूर्णता के बारे में बात करेंगे, वह समय जब मसीह लौटेगा और सम्पूर्ण संसार को अपना राज्य बनाने की परमेश्वर की योजना को पूर्ण करेगा।

देखें यूहन्ना प्रकाशितवाक्य 11:15 में किस प्रकार मसीह के दूसरे आगमन पर परमेश्वर के राज्य का वर्णन करता है:

> जब सातवें दूत ने तुरही फूँकी, तो स्वर्ग में इस विषय के बड़े बड़े शब्द होने लगे: "जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा।" (प्रकाशितवाक्य 11:15)

जब मसीह पृथ्वी पर लौटेगा, तो संसार का सम्पूर्ण राज्य सदा सर्वदा के लिए परमेश्वर का और उसके मसीह का राज्य बन जाएगा।

आज के मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम पीछे मुड़कर 2000 वर्ष पूर्व के अपने प्रभु के उदघाटन के कार्य को देखते हैं। हमने आज उसके राज्य की निरन्तरता के दौरान उसके राज्य को बढ़ाया, और हम उस दिन के लिए प्रार्थना, कार्य और आशा करते हैं जब मसीह परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाएगा जैसा वह स्वर्ग में है। यह हमारे मसीही विश्वास का केंद्र है जैसे यह पुराने नियम के विश्वास का केंद्र था। पुराने नियम में परमेश्वर के राज्य की सारी आशाएँ परमेश्वर के राज्य के उदघाटन, निरन्तरता और पूर्णता की इन तीन अवस्थाओं में मसीह में पूर्ण होती हैं।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने पुराने नियम की बड़ी तस्वीर को समझने के सर्वोत्तम मार्गों में से एक के रूप में परमेश्वर के राज्य के महत्वपूर्ण बाइबल-संबंधी विषय का परिचय दिया। हमने देखा कि परमेश्वर ने आदि से अपने स्वर्गीय राज्य को पृथ्वी पर लाने की योजना बनाई थी। हमने देखा कि किस प्रकार परमेश्वर ने प्राचीन इतिहास में, इस्राएल के इतिहास में, और नये नियम के काल में इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए कार्य किया। जब हम पुराने नियम के अपने सर्वेक्षण को जारी रखते हैं, तो हम बार-बार राज्य के इस विषय पर लौटेंगे क्योंकि यह सम्पूर्ण पुराने नियम में सर्वाधिक पूर्ण और एकीकृत करने वाला विषय है। और जब हम ऐसा करते हैं, तो नये नियम के विश्वासियों के रूप में यह हमें अवसर देगा कि हम आज भी राजा और उसके राज्य के लिए जीने हेतु पुराने नियम को अपने मार्गदर्शक के रूप में देख सकें।